



# TIMES OF INDIA

NEW DELHI Page 12 Price Rs. 3.00

अनोखे अंदाज़ और निराले तेवर के साथ इंसाफ़ की डगर पर

WEEKLY HINDI, ENGLISH, URDU

www.timesofindia.com

WED 25 MARCH - TUE 31 MARCH 2026

VOL. 14. ISSUE 13

RNI No. DELMUL/2012/47011

## सुप्रीम कोर्ट को बम से उड़ाने की धमकी देने वाला पूर्व प्रोफेसर गिरफ्तार



नई दिल्ली। राजधानी में सनसनी फैलाने वाले मामले में दिल्ली पुलिस ने बड़ा खुलासा करते हुए सुप्रीम कोर्ट सहित देशभर की अदालतों और पुलिस थानों को बम से उड़ाने की धमकी देने वाले आरोपी Lewis Srinivas को गिरफ्तार कर लिया है। जांच में सामने आया है कि आरोपी एक पूर्व सहायक प्रोफेसर रह चुका है और उच्च शिक्षित है।

पुलिस के अनुसार, आरोपी ने डार्क वेब का इस्तेमाल करते हुए ५ से अधिक फर्जी ईमेल आईडी बनाई थीं और इनके जरिए अलग-अलग

जगहों पर धमकी भरे संदेश भेजे। वह अपने आईपी पते को छिपाने में भी माहिर था, जिससे उसे ट्रेस करना जांच एजेंसियों के लिए चुनौतीपूर्ण रहा।

पूछताछ में सामने आया है कि आरोपी न्याय व्यवस्था से नाराज था। मैसूर में उसके परिवार की पुश्तैनी जमीन से जुड़ा विवाद लंबे समय से चल रहा था, जिसमें उसे न्याय नहीं मिलने का आभास हुआ। इसी वजह से वह अदालतों और पुलिस व्यवस्था के खिलाफ आक्रोशित हो गया और उसने इस तरह की साजिश रची।

## PNG को बढ़ावा: 6 हजार लोगों ने छोड़ा LPG कनेक्शन, सरकार ने बताए कारण

नई दिल्ली। देश में गैस आपूर्ति को संतुलित बनाने के प्रयासों के तहत केंद्र सरकार पाइप से मिलने वाली प्राकृतिक गैस को बढ़ावा दे रही है। इसी कड़ी में अब तक करीब 6 हजार लोगों ने स्वेच्छ से अपना रसोई गैस कनेक्शन छोड़ दिया है। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के सचिव पंकज जैन ने इस कदम के लिए उपभोक्ताओं का आभार जताते हुए अन्य लोगों से भी अपील की है कि वे जरूरतमंदों के हित में ऐसा कदम उठाएं।

सरकार के अनुसार, जिन शहरी क्षेत्रों में पाइप से गैस की सुविधा उपलब्ध है, वहां लोगों को इस व्यवस्था को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। योजना के तहत भविष्य में ऐसे इलाकों में रसोई गैस सिलेंडर की आपूर्ति सीमित



या बंद भी की जा सकती है, जहां यह सुविधा उपलब्ध होने के बावजूद इसका उपयोग नहीं किया जा रहा है। हालांकि, जिन क्षेत्रों में पाइप से गैस उपलब्ध कराना संभव नहीं है, वहां यह नियम लागू नहीं होगा।

सरकार का कहना है कि पश्चिम एशिया से गैस आपूर्ति में आ रही बाधाओं के चलते यह कदम उठाया गया है। इससे शहरों में रहने वाले लोग पाइप गैस का उपयोग करेंगे और

का आयात भी किया जा रहा है। सरकार ने स्पष्ट किया है कि रसोई गैस की कुल आपूर्ति सामान्य बनी हुई है और प्रतिदिन लाखों सिलेंडर वितरित किए जा रहे हैं। कालाबाजारी और जमाखोरी पर रोक लगाने के लिए हाल ही में कई स्थानों पर छापेमारी कर सैकड़ों सिलेंडर जब्त किए गए हैं।

पाइप गैस को बढ़ावा देने के लिए गैस कंपनियां उपभोक्ताओं को विशेष छूट और सुविधाएं दे रही हैं। सरकार ने राज्यों को भी निर्देश दिए हैं कि वे निगरानी बढ़ाएं और योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करें। साथ ही लोगों से अपील की गई है कि वे किसी भी प्रकार की अफवाहों पर ध्यान न दें, क्योंकि गैस आपूर्ति की स्थिति नियंत्रण में है।

## ‘हिसाब चुकाने’ वाले बयान से गरमाई सियासत, अरविंद केजरीवाल का इशारों में हमला

नई दिल्ली। (टॉप ब्यूरो) दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल के हालिया बयान ने राजनीतिक हलकों में हलचल तेज कर दी है। बिना किसी का नाम लिए उन्होंने ‘हिसाब चुकाने’ की चेतावनी देते हुए कहा कि जुल्म उताना ही करना चाहिए, जितना खुद सह सकें। उनके इस बयान को लेकर सियासी अटकलें तेज हो गई हैं।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि आम तौर पर केजरीवाल इस तरह के तीखे बयान केंद्र सरकार के खिलाफ देते रहे हैं, लेकिन इस बार उन्होंने सीधे तौर पर किसी का नाम नहीं लिया, जिससे उनके निशाने को लेकर संशय बना हुआ है। हाल के दिनों में



कथित आबकारी नीति मामले में ट्रायल कोर्ट से राहत मिलने के बाद उन्होंने कई मौकों पर केंद्र सरकार पर हमला बोला है।

केजरीवाल के इस बयान के बाद सोशल मीडिया मंच ‘एक्स’ पर भी चर्चा तेज हो गई। कई उपयोगकर्ताओं ने उनसे पूछा कि आखिर उनका इशारा किसकी ओर है, जबकि

कुछ ने उनके शायराना अंदाज की सराहना की। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का कहना है कि इस तरह के बयान अक्सर बड़े राजनीतिक संदेश देने के लिए किए जाते हैं।

इधर, केजरीवाल और केंद्रीय जांच एजेंसियों के बीच कानूनी टकराव भी जारी है। प्रवर्तन निदेशालय ने आबकारी नीति मामले में समन पर पेश

न होने से जुड़े दो मामलों में निचली अदालत के फैसले को चुनौती देते हुए उच्च न्यायालय का रुख किया है। इस मामले पर न्यायालय में सुनवाई जारी है।

प्रवर्तन निदेशालय का आरोप है कि केजरीवाल ने जानबूझकर समन का पालन नहीं किया और जांच में शामिल होने से बचते रहे, जबकि निचली अदालत ने अपने फैसले में कहा था कि एजेंसी यह साबित करने में विफल रही कि उन्होंने जानबूझकर आदेशों की अवहेलना की।

फिलहाल, केजरीवाल का यह बयान सियासी बहस का विषय बना हुआ है और आने वाले दिनों में इस पर राजनीतिक प्रतिक्रियाएं और तेज होने की संभावना है।

## फीस वृद्धि के विरोध में अभिभावकों का प्रदर्शन, शिक्षा निदेशालय के बाहर जताया आक्रोश



नई दिल्ली। राजधानी में निजी स्कूलों द्वारा फीस बढ़ाए जाने के विरोध में अभिभावकों का गुस्सा सोमवार को सड़कों पर नजर आया। दिल्ली अभिभावक संघ के नेतृत्व में बड़ी संख्या में अभिभावकों ने शिक्षा निदेशालय के बाहर प्रदर्शन कर अपनी नाराजगी जताई। प्रदर्शनकारियों ने पूर्वी और दक्षिण-पश्चिमी दिल्ली के कुछ निजी स्कूलों पर बिना अनुमति फीस बढ़ाने और

अभिभावकों पर दबाव बनाने का आरोप लगाया। अभिभावकों का कहना है कि स्कूल प्रबंधन कथित तौर पर बढ़ी हुई फीस नहीं देने पर छात्रों के नाम काटने और उनके रिपोर्ट कार्ड रोकने जैसे कदम उठा रहे हैं। उन्होंने बताया कि इस मुद्दे को पिछले दो वर्षों से लगातार संबंधित अधिकारियों के सामने उठाया जा रहा है, लेकिन इसके बावजूद स्कूलों की मनमानी जारी है।



## संपादकीय

# खुल गए' याजूज ओ माजूज के लश्कर तमाम चश्मे-इ-मुस्लिम देख ले तफ़्सीर-इ-हर्फ़-इ-'यनसिलून'



**Ali Aadil Khan**  
Editor

क्या यही दुनिया वो आखरी जंग है  
.....

अंततः इस युद्ध में मुसलमानों की जीत होगी और पूरी दुनिया में इस्लाम का परचम बुलंद होगा

ईरान और इजराइल + अमेरिका जंग को दुनिया अलग अलग एंगल और चश्मे से देख रही है एक वर्ग इसको **Domination War** कह रहा है दूसरा **Islam VS Judiasm** की जंग समझ रहा है। और इसको दुनिया की तीसरी और आखरी जंग भी माना जा रहा है। लेकिन इसकी हकीकत नबी SAW की हदीथ के पसे मंज़र में क्या है आज इसको समझेंगे, **Armageddon** यानी अल-मल्हामातुल कुबरा क्या है इसको भी जानने की कोशिश करेंगे। लेकिन इस जंग से मुतालिक हकीकत जानने के लिए आपको आखिर तक हमारे साथ जुड़ना होगा।

तो सबसे पहले हम आपको बता दें के ,यह युद्ध अभी 'जीत-हार' के **stage** पर नहीं है—बल्कि एक लंबी रणनीतिक लड़ाई बन चुका है, जहाँ दोनों पक्ष अलग-अलग तरीकों से बढ़त लेने की कोशिश कर रहे हैं। 'इसी बीच आपको बता दें के ,,,'शिया क्रौम को यहूदी नस्ल से भी जोड़कर देखा जाता है और एक मान्यता है कि ये दोनों ही सुन्नी **world** के दुश्मन हैं। लेकिन असलियत यह है कि 'कुछ मजहबी समानताएँ होने के बावजूद, **Iran** और **Israel** के बीच राजनीतिक, आर्थिक और वर्चस्व का टकराव इतना गहरा है कि किसी स्थायी गठबंधन की संभावना लगभग नहीं के बराबर है।

आपको यहाँ यह बताना ज़रूरी है के , इजराइल 13 से अधिक मुस्लिम देशों से घिरा हुआ है, जिनमें लेबनान , सीरिया ,जॉर्डन , मिस्र के अलावा

मोरक्को, सूडान, सऊदी अरब जैसे देश भी शामिल हैं। गज़ा और फलस्तीन में मुसलमानों पर जुल्म के जो पहाड़ इजराइल ने तोड़े उनका तमाशा ये सारे देश देखते रहे लेकिन इसमें तो कोई शक ही नहीं है , **2200 KM** की दूरी से ईरान वो हिम्मत कर पाया जो इन 13 देशों में से किसी ने नहीं जुटाई।

'यह जंग फिलहाल ताकत, सुरक्षा और क्षेत्रीय प्रभुत्व यानी (**Regional Dominance**) की वार है , साथ ही **Survival** और **strategic** लड़ाई भी दिख रही है और हर **player** अपनी सीमा में खेल रहा है।' मगर आगे चलकर यह मजहबी जंग यानी तीसरी और आखरी आलमी जंग यानी **Armeddagon** या अल मल्हामातुल कुबरा में बदल जायेगी। हमारा अध्ययन बताता है के फिलहाल 'यह जंग **geopolitical** यानी ज़मीन के टुकड़ों , तेल , खनिज , समुद्री रास्तों और ऊर्जा के भंडारों पर क्रब्जे की जंग है नाकि जिहाद यानी **theological** '। लेकिन आगे चलकर यह जिहाद में तब्दील हो जाएगी।

आइये इस क्रोनोलॉजी को जरा हम भी समझें , दरअसल **Hamas** , इजराइल के साथ लड़ाई को सिर्फ गज़ा स्ट्रिप तक देखता है, यानी अपने अधिकार की लड़ाई समझता है, हालांकि बैतूल मक्दस के तहफ़्फुज और सुरक्षा के लिए भी इस जंग को लड़ा जाता है।

जबकि **Iran** हजारों किलोमीटर दूर जाकर इस लड़ाई को पूरे मिडिल ईस्ट पर अपने प्रभुत्व और **Dominence** के **Perspective** यानी नुक़्तए नज़र से देख रहा है। अरबों के पास तेल की दौलत तो है जिसमें उनका कोई कमाल नहीं है बल्कि वो तो कुदरती ख़ज़ाने के तौर पर इनको नबी **SAW** की दुआओं के तुफ़ैल मिल गई है। जिसकी हिफाज़त भी इन अरब हुक्मरान से नहीं हो पाई। फ़ौज और टेक्नोलॉजी की इनके पास बहुत कमी है। इसीलिए अपनी ज़मीन , गैस

, तेल जैसे कुदरती भण्डार की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी अमेरिका को दे रखी है।

अक्सर **Videos** में आपने गज़ा के मज़लूम, मासूम, भूक प्यास और ज़ख्मों से चूर बच्चों को बिलकते हुए अरब हुक्मरान और अरब अवाम से सवाल करते हुए देखा होगा 'ऐ हमारे भाई अरबो तुम कहाँ हो हमारी मदद क्यों नहीं करते' ? यही सवाल अरब हुक्मरान से हर मज़लूम देश का है कि वो ज़ालिम इजराइल, इंटरनेशनल क्रिमिनल और टेरिस्ट नेतन याहू के साथ क्यों हैं ? उनकी यह दोस्ती खुद अरबों की हलाकत और बर्बादी का निशाँ बन सकती है। उनके बारे में मुहम्मद **SAW** की पेशनगोई है ' **وَيَلُّعُ لَعْرَبٍ مِنْ شَرِّ قَوْمٍ فَافْتَرَبْ**। यानी ( **عربوں کی تباہی اس بلا سے ہوگی جو قریب ہی آگے ہے** )

**Sahih al-Bukhari 7059** किताबुल फ़ितन

ईरान सुप्रीमो आयतुल्लाह अली खामनोई के जानंशी और ईरान के नए सुप्रीमो मुज्तबा अली खामनोई का ताज़ा बयान आपको याद दिलाता हूँ , उन्होंने कुछ इस तरह कहा के 'अमन और मुज़ाकरों की बात करने वाले लीडर को तो तुमने मार दिया और मैं तो हथियार और जंग की ज़बान जानता हूँ '

ज़िंदा रहना है तो हालात से डरना कैसा जंग लाज़िम हो तो लश्कर नहीं देखे जाते मुज्तबा खामनोई की इस धमकी बाद बाद अमेरिका बज़ाहिर अपनी जान और इज़्ज़त बचाने के लिए इधर उधर से शान्ति शुरू करा रहा है। इस्लामाबाद में मुस्लिम देशों के विदेश मंत्रियों की मीटिंग अमेरिका की इसी कोशिश का हिस्सा है। लेकिन फिलहाल ईरान अगर **COMPROMISE** करेगा भी तो अपनी शर्तों पर। लेकिन एक छुपी हुई सच्चाई यह है के **ceasefire**,

**Permanent peace** नहीं है यह अक्सर **temporary pause**

होता है और दोनों पक्ष **future** के लिए फिर तैयारी करते हैं। इसलिए 'फायदा' **short-term** में ही माना जाएगा। और आखिर में ये बनी नो इंसान अपने हाथों से ही सजी हुई दुनिया को जलाकर राख करेगा, और **nuclear waar** उसी का इंतज़ार कर रही है जो अब लगभग करीब है। उसके लिए इस जंग में कई निशानियाँ मौजूद हैं मिसाल के तौर पर ' ' 'अमेरिका और इजराइल के साथ बढ़ते तनाव के बीच, ईरान द्वारा समुद्र के नीचे (**ndersea/ Underwater**) बिछी इंटरनेट केबलों को काट देने की धमकी से ग्लोबल इंटरनेट संकट पैदा हो गया है। यह विशेष रूप से (**Red Sea**) और फारस की खाड़ी में मौजूद इंटरनेट केबलों से संबंधित है, जो पश्चिम और दक्षिण एशिया को दुनिया से जोड़ती हैं। विश्व का -95% से अधिक डेटा इन केबलों के माध्यम से ट्रांसफर होता है, ऐसे में इनके कटने से ग्लोबल इंटरनेट सेवाएं बुरी तरह प्रभावित हो सकती हैं। यानी दुनिया का एक बड़ा हिस्सा एक दम रुक जाएगा थम जाएगा।

ईरान ने खुली वार्निंग दे रखी है जो देश भी इजराइल और अमेरिका से अपने डिप्लोमेटिक रिश्ते रखेगा वो सब देश इस बात के लिए तैयार रहें कि उनको होर्मुज़ से रास्ता नहीं दिया जाएगा और उनको इंटरनेट सुविधा से हाथ धोना पड़ सकता है। नबी **SAW** की हदीथ का मफहूम है , जिसको फिल्लों का इल्म नहीं होगा वो फिल्लों से कैसे बचेगा? यानी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

की फिल्लों के बारे में अहादीस और पेशनगोइयों का इल्म होना भी ज़रूरी इल्म में आता है।

हदीथ के मुताबिक़ क़यामत से कुछ पहले एक आलमी जंग होगी जिसको हदीथ में अल-मल्हामा अल-कुबरा (**Al-Malhama Al-Kubra**) और ईसाई धर्मग्रंथों में इसे 'आर्मागेडन' (**Armageddon**) (**The Great War/ Battle**) कहा गया है। यानी कयामत के करीब होने वाली वह विनाशकारी लड़ाई है जो हक (सच्चाई) और बातिल (झूठ) के बीच का निर्णायक मुकाबला होगा। हदीस में आता है के एक परिंदा आसमान में उड़ते हुए इस तलाश में होगा के ज़मीन का कुछ हिस्सा खाली मिले तो वो ज़मीन पर उतर जाए लेकिन ज़मीन इंसानी लाशों से पटी हुई होगी और आखिर कार वो परिंदा लाशों पर ही थक कर गिर जाएगा। अल-मल्हामा अल-कुबरा के बारे में मुख्य बातें: स्थान और प्रकृति: यह लड़ाई मुख्य रूप से शाम (आधुनिक सीरिया/ फिलिस्तीन क्षेत्र) की धरती पर लड़ी जाएगी। यह कोई सामान्य राजनीतिक युद्ध नहीं, भयानक विनाश: हदीसों (इस्लामी ग्रंथों) के अनुसार, यह मानव इतिहास की सबसे खौफनाक जंग होगी।

माना जाता है कि यह कयामत से पहले की एक बड़ी निशानी है, जो हजरत इमाम मेहदी के ज़हूर (आगमन) और दज्जाल (**Antichrist**) के प्रकट होने से पहले या उसके दौरान होगी। इस्लामिक मान्यताओं के अनुसार अंततः इस युद्ध में मुसलमानों की जीत होगी और पूरी दुनिया में इस्लाम का परचम बुलंद होगा।

# डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ़ अमेरिका में उग्र प्रदर्शन

न्यूयॉर्क/वॉशिंगटन: (टॉप ब्यूरो) अमेरिका के कई बड़े शहरों में पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नीतियों के खिलाफ़ जोरदार प्रदर्शन हो रहे हैं। 'नो किंग्स' नामक रैलियों के तीसरे चरण में लाखों लोगों की भागीदारी देखी गई है।

प्रदर्शनकारी ईरान नीति, कड़े आब्रजन कानूनों और बढ़ती महंगाई के विरोध में सड़कों पर उतर आए हैं। उनका कहना है कि 'अमेरिका में सत्ता जनता की है, किसी एक नेता या उसके समर्थकों की नहीं।'

देश के प्रमुख शहरों न्यूयॉर्क, वॉशिंगटन डी.सी. और लॉस एंजेलिस सहित कई स्थानों पर बड़ी रैलियां आयोजित की गईं। राजधानी वॉशिंगटन में नेशनल मॉल और लिंकन मेमोरियल तक भारी भीड़ उमड़ पड़ी। हालांकि, व्हाइट हाउस ने इन प्रदर्शनों को 'ट्रंप-विरोधी अभियान' बताते हुए खारिज कर दिया। शनिवार को आयोजित 'नो किंग्स' प्रदर्शनों में



मिनेसोटा प्रमुख केंद्र रहा। यहां हाल ही में संघीय आब्रजन कार्रवाई के दौरान दो लोगों की मौत के बाद लोगों में आक्रोश बढ़ गया, जिससे देशभर में विरोध प्रदर्शन तेज हो गए।

हजारों लोग तख्तियां लेकर सड़कों पर उतरे, जबकि डेमोक्रेटिक

पार्टी के कई वरिष्ठ नेताओं ने सेंट पॉल स्थित राज्य कैपिटल के बाहर जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान प्रसिद्ध गायक ब्रूस स्पिंगस्टीन ने भी मंच पर आकर आब्रजन नीतियों के विरोध में प्रस्तुति दी। न्यूयॉर्क के टाइम्स स्क्वायर में भी

हजारों लोगों की भीड़ जुटी, जहां से मिडटाउन मैनहैटन तक मार्च निकाला गया। भीड़ के कारण पुलिस को कई सड़कों को बंद करना पड़ा। आंकड़ों के अनुसार, पिछली 'नो किंग्स' रैलियों में केवल न्यूयॉर्क के पांचों क्षेत्रों में एक लाख से अधिक लोग

शामिल हुए थे, जबकि देशभर में कुल भागीदारी लगभग ख्र लाख तक पहुंच चुकी है। सुरक्षा के मद्देनजर कई राज्यों में राष्ट्रीय गार्ड तैनात किए गए हैं, हालांकि आयोजकों का दावा है कि प्रदर्शन पूरी तरह शांतिपूर्ण हैं।

व्हाइट हाउस में वापसी के बाद डोनाल्ड ट्रंप ने कई कार्यकारी आदेशों के माध्यम से राष्ट्रपति शक्तियों का विस्तार किया है। साथ ही, उन्होंने शीर्ष कानून प्रवर्तन अधिकारियों से अपने राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ कार्रवाई करने की बात कही है। हालांकि, डोनाल्ड ट्रंप ने इन आरोपों को खारिज करते हुए कहा, 'मैं राजा नहीं हूँ,' और दावा किया कि देश को संकट से उबारने के लिए ये कदम आवश्यक हैं। वहीं, आलोचकों का कहना है कि प्रशासन के कुछ निर्णय असंवैधानिक हैं और अमेरिकी लोकतंत्र के लिए खतरा पैदा कर सकते हैं।

## NOTICE:

Times of Pedia does not guarantee, directly or indirectly, the quality or efficacy of any product or services described in the advertisements or other material which is commercial in nature in this Newspaper. Furthermore, Times of Pedia assumes no responsibility for the consequences attributable to inaccuracies or errors in the printing of any published material from the news agencies or articles contributed by readers. It is not necessary to agree with the views published in this Newspaper. All disputes to be settled in Delhi Courts only.

## ईरान की प्रतिक्रिया के बाद अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में कच्चे तेल की कीमतों में तेज़ उछाल

नई दिल्ली: अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में एक बार फिर तेज़ उछाल दर्ज किया गया है। सोमवार को आई भारी गिरावट के बाद मंगलवार को कीमतों में मजबूती देखी गई।

ब्रेंट कच्चा तेल एक बार फिर 100 डॉलर प्रति बैरल के स्तर को पार कर गया। मंगलवार सुबह एशियाई बाजार में इसकी कीमत 3.75 प्रतिशत बढ़कर 103.69 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गई।



इससे पहले सोमवार को गिरावट उस समय आई जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान पर नए हमलों को टालने और संभावित शांति

समझौते के संकेत दिए थे।

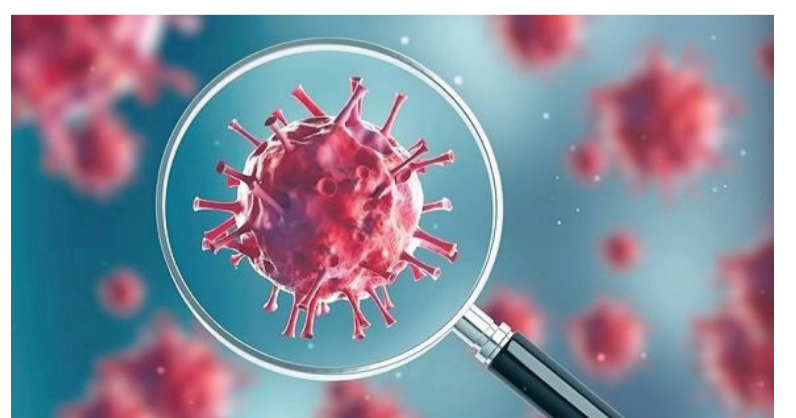
हालांकि, बाद में ईरान ने इन दावों को खारिज कर दिया, जिसके बाद बाजार का रुख बदल गया और कच्चे तेल की कीमतों में फिर से तेजी देखने को मिली।

विशेषज्ञों का मानना है कि पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव और अनिश्चितता के कारण ऊर्जा बाजार में उतार-चढ़ाव जारी रह सकता है, जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी प्रभाव पड़ने की संभावना है।

## वियतनाम: राजधानी हनोई में इस साल की शुरुआत से अब तक कोविड-19 के 29 मामले दर्ज

वियतनाम की राजधानी हनोई में इस साल की शुरुआत से अब तक कोविड-19 के 29 - मामले दर्ज किए गए हैं। हनोई रोग नियंत्रण केंद्र ने 20 से 27 मार्च के बीच 12 कम्प्यूनों और वाडों में 17 नए संक्रमण की सूचना दी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) वर्तमान में बी.ए.-3.2 वेरिएंट की निगरानी कर रहा है। स्वास्थ्य विभाग ने लोगों से सतर्क रहने और बचाव करने की सलाह दी है।

डब्ल्यू.एच.ओ. ने कहा कि प्रयोगशाला स्थितियों में यह वेरिएंट



कुछ एंटीजेनिक परिवर्तन और प्रतिरक्षा से बचने की विशेषताएं दिखाता है। कोविड-19 के एक नए वेरिएंट को

अनौपचारिक रूप से सिकाडा नाम दिया गया है। कई क्षेत्रों में सीमित समूहों में इसका पता चला है।

# Beyond the Narrative: Judaism, Zionism, and the Politics of Perception



Najmuddin A Farooqi

Understanding the Jewish community requires a nuanced distinction between religion, identity and political ideology. Broadly, Jewish society today may be viewed through three overlapping yet distinct lenses: religious or ultra-Orthodox Judaism, secular Jewish identity and political Zionism. While these are often conflated in public discourse, they differ significantly in theology, worldview and political aspiration.

At its core, Judaism is a faith rooted in spiritual covenant rather than territorial nationalism. Interpretations of the Hebrew Bible (Torah) have long been debated and some religious scholars argue that there is no explicit divine mandate granting Jews exclusive political sovereignty over a specific land.

Notably, Rabbi Elhanan Beck has articulated the position that, based on Torahic principles, the modern State of Israel lacks

religious legitimacy.

However, such theological interpretations should not be misconstrued as a denial of the right of Jews or Israelis to live in peace, security and sovereignty. On the contrary, like all peoples, Jews have an equal right to safety and self-determination, whether in Israel or elsewhere.

The broader philosophical message embedded in Abrahamic traditions Judaism, Christianity and Islam is the belief in one Creator and a shared humanity, where all individuals possess the right to live freely and with dignity across the world.

As human civilisation evolved, so too did the concept of political organisation. Over centuries, societies transitioned from fluid, borderless communities to structured nation-states defined by territorial boundaries and sovereignty. Within this historical context, modern political Zionism emerged relatively recently.

Zionism, as a political movement, took shape in the late 19th century, driven largely by rising antisemitism in Europe. Its central objective was not expansionism, but the establishment of a se-

cure and sovereign homeland for Jews as a response to persistent persecution and statelessness. This aspiration gained urgency and global sympathy in the aftermath of the "The Holocaust".

Turning to contemporary Israeli leadership, figures such as Benjamin Netanyahu often attract scrutiny and polarised opinions. While his governance style is frequently described as right-leaning or assertive, it would be an oversimplification to categorise him purely through a religious lens.

According to Elhanan Beck he is an Amalek. His political actions are better understood within the framework of national security, strategic considerations and domestic politics and retaining power rather than theological motivations.

It is also important to address widespread narratives regarding expansionism. The notion of a so-called "Greater Israel" is often circulated in political rhetoric and social media, yet it remains largely speculative and lacks substantive grounding in official Israeli policy.

A more plausible in-

terpretation of Israeli strategy is the pursuit of security buffers measures shaped by historical trauma, regional hostility and a perceived need for strategic depth.

Parallel to this discourse is the portrayal of regional powers such as Iran. Some narratives position Iran as the central pillar of resistance in the Middle East and a decisive counterbalance to Israel and the United States. However such portrayals overlook internal challenges geopolitical complexities and inconsistencies in governance and security outcomes.

In recent years, Iran has faced significant internal and external pressures, including targeted attacks on key personnel, domestic unrest and contested narratives about foreign interference. These developments highlight the multifaceted and often fragile nature of regional power dynamics, rather than supporting simplified or idealised portrayals of strength.

Another emerging concern is the spread of exaggerated or misleading information particularly on social media regarding technological advancement and economic progress. Claims

about rapid strides in research, development and nanotechnology are sometimes amplified without sufficient verification.

On the contrary comparing and downgrading the rate of growth and performance of the Islamic countries in the region including Saudi Arabia, the 'wisdom of Gulf countries', widely regarded as a central and stabilising force in the region's economic and political landscape.

The journey from Judaism to Zionism reflects a broader evolution from faith based identity to modern political statehood. However, conflating religion with political ideology or geopolitics often leads to misunderstanding and polarisation.

A balanced perspective requires recognising the distinction between religious belief and political movements, the legitimate security concerns of nations and the dangers of misinformation in shaping public opinion. Ultimately, the global discourse must move beyond binaries and propaganda toward a more informed, nuanced and humane understanding of history and geopolitics.

# Faith, Godmen and Undermining Rationalism



Prof. Ram Puniyani

We regularly read the news about Asaram Bapu; a rape convict and Gurmeet Ram Rahim Singh Insan a murder and rape convict; getting parole. These two Babas are a leading brand currently with huge property and a network of Ashrams and large number of devotees ready to do anything for them. These are two most well-known of the gang of frauds who wear the cloak of holiness and do the things most depraved. The breed of Babas seems to have gone up in number during the last few decades. No doubt there have been others of their ilk who have proliferated through different mechanisms to rise and establish their empires of wealth and devotion. As such what we see is just the tip of the iceberg of 'faith-blind faith' empires flourishing on the rising insecurity in the society. While Epstein types are indulging in this society through other mechanisms, the ones we see here in India have strong rooting in blind faith which they very cleverly use to exploit the people at large for wealth and women.

One such case surfaced recently in Na-

shik, in Maharashtra. Here one Ashok Kumar Kharat has been sent to police custody for his fraudulent use of faith. He was visited by all and mighty of Maharashtra and one of his devotees is the Chief of Maharashtra Women's Commission, Rupali Chakankar, whose video with this fraud shows her washing his feet and carrying an umbrella to protect him from sun. Kharat claimed to be an ex-Merchant Navy Captain, endowed with divine powers and was playing the role of someone who is an astrologer and numerologist. He was visited by ministers and high and mighty. He also used to sell polished seeds of tamarind which were sold as precious gems apart from other money-spinning activities. Many women who initially suffered his assaults were keeping quiet as his connections with high ups were strong.

This is another hateful addition to the number of flourishing Godmen, who have been given a place of respect. We had Goodmen early also starting from Chandra swami, Dharendra Brahmchari, Acharya Rajneesh, Mahesh Yogi who commanded a large presence in the political and religious arena of society. In between the rise of Satya Sai baba also dominated the scene with his magic tricks of bringing forth ash by the flick of fingers. His divine powers were restricted to ash and small rings and he refused to produce

melons from this trick. The cases of sexual abuse also came to light in his case. Ma Amritanand Mayi has been another divine power. also called kissing Amma. Nirmal Baba, Benny Hinn and many Bangali babas also stroll the streets claiming to solve the problems of all and sundry.

On the top currently there are the likes of Jaggi Vasudev and Baba Ramdev. Vasudev has coined the miraculous word 'inner engineering' and has followers among the IT generation also. Sri Sri Ravishanker has his own unique political influence by promoting Anna movement and organizing a festival which caused great harm to ecology particularly around Yamuna River. The list is long and inexhaustible. But we cannot overlook Baba Ramdev, who began as a Yoga preacher and went on to become a very successful businessman. He had promised that if we elect Narendra Modi as PM, petrol will become cheap (35 Rs a litre) and rupee will become stronger against dollar.

One can clearly see that as economic insecurity and inequality is going up in the society, the hold of faith-based Gurus, is going up to the sky. This is accompanied by the rise of faith-based knowledge in the society. One recalls that using mythology to undermine rational thought is not restricted only here in India. I recall in one of the meetings in Paki-

stan, research on mythological djinns was presented as the solution to the energy shortage in Pakistan. While India had much better foundations in science and rational thinking leading to an excellent chain of institutes doing valuable work contributing richly to Indian progress, the trends of the last few decades are very disheartening.

Prime Minister himself laid the foundation of 'mythology as science' when inaugurating a modern hospital, he stated that there must have been a plastic surgeon in ancient India who could transplant elephant head on human torso. Already so many such pleasant mythological stories like pushpak viman, capable of interplanetary travels were already there. A whole series of leaders from Modi's stable started claiming that all the genetic science, space craft, and the internet were present in our traditions!

To cap it all the mythological stories are being taken seriously and a lot of funds are being earmarked for research on Ramayan and Mahabharat. A country which needs to focus on malnutrition and infectious diseases is investing in Panchagavya, a mixture of cow products, urine, dung, milk, ghee and curd! Faith based understanding is being promoted as the Prime minister calls Bageshwar Dham baba who claims the mystic powers of telling the past of the person, as his younger brother.

Similarly, the new generation is being drilled with Indian Knowledge Systems. Surely India has contributed a lot in rational thinking, but grain has to be separated.

We can see in the history that faith-based knowledge is related to the political systems promoting status quo or throwing society back to earlier times when rational thinking was not so strong. Keeping all this in mind even Darwin's 'theory of Evolution of Species' is dumped and the Periodic table, the foundation of Chemistry, has been removed from New Education Policy curriculum.

Indian Constitution through Article 51 A (h) (added by the 42nd Amendment in 1976), mandates as a fundamental duty that every citizen must develop scientific temper, humanism, and the spirit of inquiry and reform. It promotes a rational, evidence-based approach to life to overcome superstition and promote social progress. Our present direction is totally contrary to this where the ruling party resorts and promotes blind faith, the changes in New Education Policy. This will be extremely harmful for coming generations and the likes of Kharat, Bageshwar dham Baba will flourish. The likes of Dr Dabholkar, Govind Pansare, M.M. Kalburgi and Gauri Lankesh will have a tough time to do their enlightening work for rational thought at the cost of their lives.

# Jamaat-e-Islami Hind Hosts Eid Get-Together 2026, Promotes Message of Harmony and Unity

New Delhi: Jamaat-e-Islami Hind (JIH) organised its Eid Get-Together 2026 on Friday, 27 March at the Margosa and Silk Cotton Lawn, India Habitat Centre. The event brought together a large number of distinguished guests from various walks of life, including diplomats, religious leaders, public representatives, media personalities, and members of civil society.



sibility. Addressing the gathering, the President of Jamaat-e-Islami Hind, Syed Sadatullah Husaini said, “Festivals are a means to bring people together and strengthen social bonds. Such occasions serve as platforms for dialogue, understanding, and cooperation rather than division. We hope this Eid Get-Together will bring about meaningful engagement among participants and enable us to work collectively for an inclusive and harmonious society.”

The gathering served as an occasion to share the joy of Eid and to promote the values of peace, justice,

and social harmony. Participants from diverse backgrounds interacted with each other and

reaffirmed the importance of mutual respect and coexistence in society. The presence of people

from different countries, faiths, and institutions reflected a spirit of unity and collective respon-

## SUBSCRIPTION FORM TIMES OF PEDIA

Issue	Subscription Price	Years
52	250/-	1
104	500/-	2
260	1,300/-	5
520	2,600/-	10
--	5,000/-	Life

Name :.....  
 Address :.....  
 Email:.....  
 Contact Phone No.....  
 for donation  /life  /10 yrs  /5 yrs  subscription  
 The sum of Rupees..... (Rs...../-)  
 through cheque/DD No.....dt.....

Fill the above form neatly in capital letters and send it to us on the following address :  
 Times of Pedia, K-2-A-001, Abul Fazal Enclave-I,  
 Jamia Nagar, Okhla, New Delhi-110025  
 or email : [timesofpedia@gmail.com](mailto:timesofpedia@gmail.com)

Also Send us your subscription, membership, donation amount in favour of Times of Pedia, New Delhi  
 Punjab National Bank, Nanak Pura Branch,  
 New Delhi-110021  
 A/C No.1537002100017151, IFS Code : PUNB 0153700

“First, they ignore you, then they laugh at you, then they fight you and then you win.”

- Mahatma Gandhi

## ADVERTISEMENT TARIFF TIMES OF PEDIA

Size/Insertion Single	B&W (Rs)	4 Colour (Rs)
Full Page (23.5 x 36.5 cm)	30,000/-	1,00,000/-
A4 (18.7 x 26.5 cm)	20,000/-	60,000/-
Half Page (Tall-11.6 x 36.5 cm)	18,000/-	50,000/-
Half Page (wide-23.5 x 18 cm)	8,000/-	50,000/-
Quarter Page (11.6 x 18 cm)	10,000/-	28,000/-
Visiting Card size (9.5 x 5.8 cm)	3,000/-	10,000/-

**MECHANICAL DATA:**  
**Language:** English, Hindi and Urdu  
**Printing:** Front and Back - 4 Colours , Inside pages - B&W  
**No. of Pages:** 12 pages (more in future)  
**Price:** Rs. 3/-  
**Print order:** 25,000  
**Periodicity:** Weekly  
**Material details:** Positives/Format of your advertisements should reach us 10 days before printing.  
 Note: 50% extra for back page, 100% extra for front page  
 Please Add Rs. 10 for outstation cheques.  
 50% advance of total add cost would be highly appreciable, in case of one year continue add. Publication cost will reduce 50% of actual cost.

**Bank transactions details of TIMES OF PEDIA**  
 Send your subscriptions/memberships/donations etc.  
 (Cheques/DD) in favour of TIMES OF PEDIA New Delhi  
 Punjab National Bank, Nanak Pura Branch , New Delhi-110021  
 A/C No.1537002100017151, IFS Code : PUNB 0153700

## एलोवेरा से पाएँ निखार, रोज़ाना इस्तेमाल से दमकेगी त्वचा

नई दिल्ली। (टॉप ब्यूरो) आज की भागदौड़ भरी जिंदगी और बढ़ते प्रदूषण के कारण लोगों की त्वचा अपनी प्राकृतिक चमक खोती जा रही है। ऐसे में महंगे ब्यूटी प्रोडक्ट्स के बजाय लोग अब फिर से प्राकृतिक उपायों की ओर लौट रहे हैं। इन्हीं में से एक है एलोवेरा, जिसे त्वचा और बालों के लिए बेहद लाभकारी माना जाता है।

विशेषज्ञों के अनुसार, एलोवेरा एक औषधीय पौधा है, जिसमें विटामिन, प्रोटीन और श्व के साथ-साथ एंटीऑक्सीडेंट, एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण, एंजाइम्स और मिनरल्स भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। ये सभी तत्व त्वचा को गहराई से पोषण देते हैं और उसे स्वस्थ बनाए रखने में मदद करते हैं। नियमित रूप से एलोवेरा जेल का उपयोग करने से त्वचा की नमी बनी रहती है, मुंहासों में कमी आती है और चेहरा प्राकृतिक रूप से चमकने लगता है।

त्वचा विशेषज्ञों का कहना है कि एलोवेरा त्वचा की जलन और सनबर्न को कम करने में भी सहायक होता है। अगर इसका सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए, जैसे कि



ताजे एलोवेरा जेल को चेहरे पर लगाकर कुछ समय बाद धो लेना या रात में सोने से पहले हल्की मसाज करना, तो इसके परिणाम जल्दी देखने को मिल सकते हैं। इसके अलावा, एलोवेरा में गुलाब जल मिलाकर लगाने से त्वचा को अतिरिक्त ताजगी मिलती है।

विशेषज्ञ यह भी सलाह देते हैं कि केवल बाहरी देखभाल ही नहीं, बल्कि संतुलित आहार और स्वस्थ जीवनशैली भी त्वचा के निखार के लिए जरूरी है। नियमित उपयोग और सही दिनचर्या के साथ एलोवेरा त्वचा और बालों की देखभाल के लिए एक प्राकृतिक वरदान

साबित हो सकता है।

इसके अलावा, एलोवेरा का उपयोग त्वचा की गहराई से सफाई करने में भी सहायक माना जाता है। यह त्वचा के रोमछिद्रों में जमी गंदगी और अतिरिक्त तेल को हटाकर उसे साफ और ताजा बनाता है। जिन लोगों की त्वचा तैलीय होती है, उनके लिए एलोवेरा एक बेहतरीन प्राकृतिक उपाय है, क्योंकि यह त्वचा का संतुलन बनाए रखने में मदद करता है। वहीं, रूखी त्वचा वाले लोगों के लिए यह एक प्राकृतिक मॉइस्चराइजर की तरह काम करता है, जिससे त्वचा मुलायम और हाइड्रेटेड

बनी रहती है। एलोवेरा में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट तत्व त्वचा की उम्र बढ़ने के लक्षणों को कम करने में भी मदद करते हैं। इसके नियमित उपयोग से झुर्रियों और फाइन लाइंस की समस्या धीरे-धीरे कम हो सकती है और त्वचा अधिक जवां नजर आती है। इसके साथ ही, यह त्वचा की रंगत को भी निखारने में सहायक होता है और दाग-धब्बों को हल्का करने में मदद करता है।

विशेषज्ञों का मानना है कि एलोवेरा का इस्तेमाल करने से पहले एक बार पैच टेस्ट जरूर कर लेना चाहिए, ताकि किसी भी प्रकार की एलर्जी या प्रतिक्रिया से बचा जा सके। इसके अलावा, हमेशा ताजा और शुद्ध एलोवेरा जेल का ही उपयोग करना चाहिए, जिससे इसके अधिकतम लाभ मिल सकें।

इस प्रकार, यदि एलोवेरा को सही तरीके और नियमितता के साथ अपनी दिनचर्या में शामिल किया जाए, तो यह न केवल त्वचा को स्वस्थ और चमकदार बनाता है, बल्कि बालों को भी मजबूत और घना बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

## खेल समाचार

### इंडियन प्रीमियर लीग 2026 में चमके वैभव सूर्यवंशी, अश्विन और वॉन के बीच राय अलग



नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग 2026 में युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी ने अपने शानदार प्रदर्शन से सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। अपने डेब्यू मैच में तेज अर्धशतक लगाकर उन्होंने क्रिकेट जगत में हलचल मचा दी है और अब उन्हें भारतीय टीम में शामिल किए जाने की चर्चा तेज हो गई है।

इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन का मानना है कि वैभव सूर्यवंशी को आगामी इंग्लैंड दौरे पर भारतीय टीम के साथ ले जाना चाहिए, ताकि वह अंतरराष्ट्रीय माहौल को समझ सकें। उनके अनुसार, भले ही उन्हें तुरंत अंतिम एकादश में मौका न मिले, लेकिन टीम के साथ रहकर वह भविष्य के लिए तैयार हो सकते हैं।

वहीं, भारतीय अनुभवी खिलाड़ी रविचंद्रन अश्विन

ने इस मामले में संयम बरतने की सलाह दी है। उन्होंने कहा कि सूर्यवंशी अभी युवा हैं और उन पर जल्दबाजी में दबाव डालना सही नहीं होगा। अश्विन का मानना है कि उन्हें अपने खेल को स्वाभाविक रूप से विकसित करने का समय दिया जाना चाहिए।

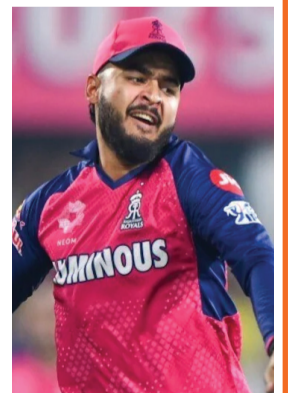
अश्विन ने उदाहरण देते हुए एमएस धोनी के लंबे करियर का जिक्र किया और कहा कि एक खिलाड़ी के पास खुद को साबित करने के लिए पर्याप्त समय होता है। उन्होंने यह भी विश्वास जताया कि वैभव सूर्यवंशी भविष्य में जरूर भारतीय टीम के लिए खेलेंगे।

फिलहाल वैभव सूर्यवंशी अपनी टीम राजस्थान रॉयल्स के लिए अच्छा प्रदर्शन जारी रखने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, जबकि क्रिकेट जगत उनकी प्रगति पर नजर बनाए हुए है।

## जीत के बाद पराग का बड़ा बयान

नई दिल्ली। आईपीएल 2026 में राजस्थान रॉयल्स के कप्तान रियान पराग ने टीम की शानदार जीत के बावजूद अपनी कप्तानी को लेकर हो रही आलोचनाओं पर खुलकर जवाब दिया है। चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ ट्वेंटी-20 मैच से जीत के बाद पराग ने साफ कहा कि अब बाहरी शोर उन्हें प्रभावित नहीं करता।

गुवाहाटी में खेले गए मुकाबले में राजस्थान रॉयल्स ने चेन्नई सुपर किंग्स को एकतरफा अंदाज में हराया।



इस जीत के साथ टीम ने सत्र की बेहतरीन शुरुआत की, वहीं पराग को अपनी कप्तानी पर उठ रहे सवाल का जवाब देने का मौका भी मिला।

## चुकंदर और पनीर से बनाएं हेल्दी अप्पे

नई दिल्ली। बदलती लाइफस्टाइल के बीच लोग अब स्वाद के साथ-साथ सेहत का भी खास ध्यान रखने लगे हैं। ऐसे में हेल्दी और टेस्टी नाश्ते की तलाश करने वालों के लिए चुकंदर और पनीर से बने अप्पे एक बेहतरीन विकल्प बनकर सामने आए हैं। यह डिश न केवल स्वादिष्ट है, बल्कि पोषण से भी भरपूर है।

खानपान विशेषज्ञों के अनुसार, चुकंदर में भरपूर मात्रा में फाइबर और जरूरी पोषक तत्व पाए जाते हैं, जो शरीर को डिटॉक्स करने और पाचन को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। वहीं पनीर प्रोटीन का अच्छा स्रोत है, जो शरीर को ऊर्जा देने के साथ मांसपेशियों को मजबूत बनाता है। इन दोनों के संयोजन से तैयार अप्पे एक संतुलित और हेल्दी स्नैक बन जाते हैं।

घर पर चुकंदर और पनीर अप्पे बनाना भी बेहद आसान है। इसमें चुकंदर को कद्दूकस कर बैटर में मिलाया जाता है और पनीर के छोटे टुकड़ों को



डालकर अप्पे पैन में पकाया जाता है। कम तेल में तैयार होने के कारण यह डिश वजन को नियंत्रित रखने वालों के लिए भी उपयुक्त मानी जाती है।

खास बात यह है कि यह नाश्ता सुबह की भागदौड़ में भी जल्दी तैयार किया जा सकता है। बच्चों से लेकर बड़ों तक, सभी को इसका स्वाद पसंद आता है। विशेषज्ञों का कहना है कि रोजाना एक जैसा नाश्ता करने से बचने के लिए ऐसे हेल्दी विकल्पों को अपनाना जरूरी है।

इस तरह चुकंदर और पनीर से बने अप्पे स्वाद और सेहत का बेहतरीन मेल हैं, जिन्हें अपनी डाइट में शामिल कर लोग अपनी दिनचर्या को और बेहतर बना सकते हैं। विशेषज्ञों

का कहना है कि इस तरह के पौष्टिक नाश्ते को अपनाने से दिन की शुरुआत ऊर्जा से भरपूर होती है और लंबे समय तक भूख भी नियंत्रित रहती है। चुकंदर में मौजूद आयरन और एंटीऑक्सीडेंट शरीर में खून की कमी को दूर करने में सहायक होते हैं, वहीं पनीर में मौजूद प्रोटीन शरीर को मजबूती देने के साथ-साथ मेटाबॉलिज्म को भी बेहतर बनाता है। इस कारण यह डिश बच्चों, युवाओं और बुजुर्गों सभी के लिए लाभकारी मानी जाती है।

इसके अलावा, चुकंदर और पनीर अप्पे को अपनी पसंद के अनुसार और भी पौष्टिक बनाया जा सकता है। इसमें गाजर, शिमला मिर्च, प्याज या

हरी सब्जियां मिलाकर इसका स्वाद और पोषण दोनों बढ़ाए जा सकते हैं। कम मसालों और कम तेल में बनने के कारण यह डिश दिल और पाचन तंत्र के लिए भी फायदेमंद होती है।

घरेलू रसोई में बनने वाले ऐसे व्यंजन न केवल सेहतमंद होते हैं, बल्कि इनमें मिलावट या प्रिजर्वेटिव का खतरा भी नहीं रहता। यही वजह है कि अब लोग बाहर के फास्ट फूड की जगह घर के बने हेल्दी विकल्पों को ज्यादा महत्व दे रहे हैं।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार, यदि इस तरह के संतुलित और पौष्टिक खाद्य पदार्थों को नियमित रूप से आहार में शामिल किया जाए, तो यह न केवल शरीर को आवश्यक पोषण प्रदान करते हैं, बल्कि कई बीमारियों से बचाव में भी सहायक साबित होते हैं। ऐसे में चुकंदर और पनीर से बने अप्पे एक आसान, स्वादिष्ट और सेहतमंद विकल्प के रूप में तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं।

# بدلتے ہوئے عالمی نظام پر قابو پانے کی امریکی کوشش

ایک نظریہ ہے۔ جسے سامراجیت کہا جاسکتا ہے۔ ویزو بلا سے لے کر ایران اور اس کے بعد کیوبا یا اس سے پہلے عراق، لیبیا، مصر، سیریا، افغانستان وغیرہ دنیا بارہوی پرانی کہانی دیکھ رہی ہے۔ حکومتوں کی تبدیلی (تعمیر چیخ) کے لئے فوجی طاقت کا استعمال کیا گیا۔ حکومت بدلنے کی جو وجوہات بتائی گئیں ان میں سے ایک بھی صحیح ثابت نہیں ہوئی۔ مثلاً کہا گیا کہ عراق کے پاس جوہری ہتھیار ہیں، پورا عراق برباد کر دیا گیا لیکن وہاں کچھ بھی نہیں ملا۔ مصر میں عوامی انقلاب کے بعد ہوئے انتخابات میں محمد مرسی صدر منتخب ہوئے۔ حکومت کا جنرل عبدالفتاح السیسی کے ذریعہ تختہ پلٹ کر مرسی کو جیل میں ڈال دیا گیا وہیں وہ اللہ کو بیارے ہو گئے۔ دہشت گردی کو ختم کرنے کے نام پر افغانستان کو کئی سال تک ملوث رکھا۔ مشرق وسطیٰ میں امریکی چوکیاں، ویزو بلا کے صدر کی گرفتاری ہو یا ایران پر حملہ اس کے پیچھے ایک ہی وجہ سمجھ میں آتی ہے وہ ہے یہاں موجود قدرتی وسائل پر قبضہ اور اسرائیل کی حفاظت۔ ایران کی تازہ جنگ سے یہ ثابت ہو گیا ہے کہ امریکہ کی منشاء مشرق وسطیٰ کے ممالک میں اپنی پسند کی حکومتیں قائم کر کے حکمرانی کی ہے۔ ایران کو اس جنگ میں غیر معمولی نقصان ہوا ہے لیکن فی الحال اس نے امریکہ کے منصوبوں پر پانی پھیر دیا ہے۔ ساتھ ہی عرب ممالک کو بھی بتا دیا ہے کہ مشرق وسطیٰ میں امریکہ کی موجودگی کس کی حفاظت کے لئے ہے اور اس کا مقصد کیا ہے۔

زیادہ لوگوں کے نقل جس میں بڑی تعداد خواتین، بچے اور بزرگ شامل تھے کا کوئی ذکر نہیں کیا۔ وہ اسرائیل کے ذریعہ غزہ میں بین الاقوامی امداد کو آنے سے روکے جانے اور اقامتہ کے سکریٹری جنرل وہاں داخل ہونے سے روکے جانے کی بات بھی بھول گئے۔ انہیں یہ بھی یاد نہیں رہا کہ اقوام متحدہ کے کسی بھی ریزولوشن پر عمل کرنا تو دور اسرائیل نے قابل توجہ بھی نہیں سمجھا۔ اس پر امریکہ یا اس کے حلیف ممالک نے کبھی کوئی نوٹس لیا۔ اپنی تقریر کے آخری حصے میں روپیوں نے مغربی ممالک سے ایک بار پھر فعال اور فیصلہ کن کردار ادا کرنے کی اپیل کی۔ انہوں نے یاد دلا دیا کہ 1945 کے بعد پہلی بار مغرب عالمی سطح پر پیچھے ہٹا ہوا نظر آ رہا ہے اور اب وقت آ گیا ہے کہ وہ دوبارہ قیادت سنبھالے۔ مارکو روپیوں کی تقریر میں ماضی کا جائزہ نہیں بلکہ مستقبل کی اسٹریٹجک سمت کا ایک منشور تھی۔ اس میں ایک واضح پیغام تھا کہ مغرب کو اپنی غلطیوں سے سبق سیکھ کر اپنی شناخت اور طاقت کو دوبارہ مستحکم کرنا ہوگا۔ جیسا کہ انہوں نے آخر میں کہا ”ماضی ختم ہو چکا ہے، مستقبل ناگزیر ہے، اور یہی مستقبل اب مغربی دنیا کے سامنے ایک چیلنج اور ایک موقع دونوں کی صورت میں کھڑا ہے۔“

پیش کشی۔ مستقبل کی طرف دیکھتے ہوئے روپیوں نے اکیسویں صدی میں مغرب کے دوبارہ عروج کے امکانات ظاہر کیے۔ انہوں نے مصنوعی ذہانت، صنعتی خود کاری، خلائی تحقیق اور اہم معدنیات کی فراہمی جیسے شعبوں میں قیادت کی ضرورت پر زور دیا۔ یہ نقطہ نظر واضح طور پر ایک مسابقتی عالمی نظام کی پیش کش ہے۔

انتخابی تشہیر کے دوران راشن واد اور امریکہ فرسٹ کو مدی بنایا تھا۔ اس حکمت عملی کا مقصد صرف معاشی بحالی نہیں بلکہ مغربی تہذیب کی طاقت اور خود اعتمادی کو دوبارہ زندہ کرنا بھی ہے۔ شاید اسی کے تحت ایگریٹ کے خلاف سختی، کئی فلاحی اداروں کی گرانٹس کی گئی اور ٹریف لگانے جیسے قدم اٹھائے گئے۔ روپیوں نے یہ اشارہ بھی

کی۔ روپیوں کے مطابق یہ تصور حقیقت سے دور تھا۔ ان کا کہنا تھا کہ اس سوچ نے انسانی فطرت، قومی شناخت اور طاقت کے توازن جیسے بنیادی عناصر کو نظر انداز کیا۔ کیونکہ اس نظام میں تعداد (اکثریت) کو اہمیت حاصل ہے۔ لہذا جو اکثریت (ایک یا کئی طبقات مل کر) میں ہوتے ہیں وہ کمزور اور کم تعداد والے طبقات کو استحصال و ظلم کا نشانہ بناتے ہیں۔ حکومت کسی بھی پارٹی کی ہو وہ ان کے خلاف کوئی سخت قدم نہیں اٹھا پاتی کیونکہ اسے انتخابات میں ہار کا ڈر ستاتا ہے۔ جتا آزاد آئینی ادارے ان پر کارروائی کرنے کے لئے ذمہ دار ہیں وہ بھی حکومت کی منشاء کا خیال رکھتے ہیں۔ خود مغربی ممالک نے ایسی پالیسیاں اختیار کیں جن کے طویل المدت نقصانات سامنے آئے۔

14 فروری 2026 کو منعقد ہونے والی میونخ سیوریٹی کانفرنس میں امریکی رہنما مارکو روپیوں کی تقریر محض ایک سفارتی خطاب نہیں تھی بلکہ مغربی دنیا کی بدلتی ہوئی سوچ اور اس کی اسٹریٹجک سمت کا واضح اشارہ بھی تھی۔ اپنی تقریر میں انہوں نے تاریخ، جغرافیائی سیاست، معیشت اور تہذیب کے سوالات کو یکجا کرتے ہوئے ایک نئے عالمی دور کی جھلک پیش کی۔ روپیوں نے اپنی تقریر کا آغاز اس تاریخی اتحاد کی یاد دہانی سے کیا جس نے بیسویں صدی میں دنیا کو بڑے بحرانوں سے بچایا تھا۔ انہوں نے 1960 کی دہائی کا حوالہ دیا جب سرد جنگ کے باعث یورپ تقسیم تھا اور کیوبا میزائل بحران جیسے واقعات نے دنیا کو ایسی جنگ کے دہانے تک پہنچا دیا تھا۔ اس وقت مغربی ممالک کے سامنے صرف فوجی چیلنج ہی نہیں بلکہ نظریاتی چیلنج بھی موجود تھا یعنی اشتراکیت بمقابلہ آزادی۔ روپیوں کے مطابق اس دور میں مغرب کی کامیابی صرف فوجی طاقت کی وجہ سے نہیں تھی بلکہ مشترکہ اقدار اور مشترکہ مقصد کے احساس کی بدولت ممکن ہوئی۔ اسی اتحاد نے بالآخر سرد جنگ کے خاتمے اور برلن دیوار کے انہدام جیسے تاریخی واقعات کو ممکن بنایا۔ تاہم روپیوں نے اس کامیابی کے بعد پیدا ہونے والے ایک ”خطرناک فریب“ پر تنقید کی جسے ”تاریخ کا خاتمہ“ کہا جاتا ہے۔ یہ نظریہ، جو فرانسس فوکویاما سے منسوب ہے، یہ دعویٰ کرتا تھا کہ لبرل جمہوریت ہی انسانی حکمرانی کی آخری شکل ہے اور پوری دنیا بالآخر اسی راستے پر چلے



گیسٹ کالم  
ڈاکٹر مظفر حسین غزالی

دیا کہ امریکہ اس مقصد کو تنہا بھی حاصل کر سکتا ہے، لیکن وہ یورپ کے ساتھ مل کر آگے بڑھنے کو ترجیح دے گا۔ یہ بیان دراصل ٹرانس اٹلانٹک تعلقات کو نئی تعریف دینے کی سمت ایک اہم اشارہ ہے۔ روپیوں نے قومی سلامتی کو صرف فوجی یا تکنیکی مسئلہ نہیں بلکہ ایک تہذیبی مسئلہ قرار دیا۔ ان کے مطابق اصل سوال یہ ہے کہ ”ہم آخر کس چیز کا تحفظ کر رہے ہیں؟“ ان کا جواب واضح تھا ایک ایسی تہذیب جو اپنی تاریخ، اقدار اور کامیابیوں پر فخر کرتی ہے۔ انہوں نے یورپ کی فکری اور ثقافتی وراثت کا ذکر کرتے ہوئے ولف گینگ امدایوس موزارت، لڈوگ فان بیٹھون، ولیم شیکسپیر، لیونارڈو ڈا ونچی اور مائیکل اینجلو جیسے عظیم مفکرین اور فنکاروں کی مثالیں

دیا کہ امریکہ اس مقصد کو تنہا بھی حاصل کر سکتا ہے، لیکن وہ یورپ کے ساتھ مل کر آگے بڑھنے کو ترجیح دے گا۔ یہ بیان دراصل ٹرانس اٹلانٹک تعلقات کو نئی تعریف دینے کی سمت ایک اہم اشارہ ہے۔ روپیوں نے قومی سلامتی کو صرف فوجی یا تکنیکی مسئلہ نہیں بلکہ ایک تہذیبی مسئلہ قرار دیا۔ ان کے مطابق اصل سوال یہ ہے کہ ”ہم آخر کس چیز کا تحفظ کر رہے ہیں؟“ ان کا جواب واضح تھا ایک ایسی تہذیب جو اپنی تاریخ، اقدار اور کامیابیوں پر فخر کرتی ہے۔ انہوں نے یورپ کی فکری اور ثقافتی وراثت کا ذکر کرتے ہوئے ولف گینگ امدایوس موزارت، لڈوگ فان بیٹھون، ولیم شیکسپیر، لیونارڈو ڈا ونچی اور مائیکل اینجلو جیسے عظیم مفکرین اور فنکاروں کی مثالیں

دیا کہ امریکہ اس مقصد کو تنہا بھی حاصل کر سکتا ہے، لیکن وہ یورپ کے ساتھ مل کر آگے بڑھنے کو ترجیح دے گا۔ یہ بیان دراصل ٹرانس اٹلانٹک تعلقات کو نئی تعریف دینے کی سمت ایک اہم اشارہ ہے۔ روپیوں نے قومی سلامتی کو صرف فوجی یا تکنیکی مسئلہ نہیں بلکہ ایک تہذیبی مسئلہ قرار دیا۔ ان کے مطابق اصل سوال یہ ہے کہ ”ہم آخر کس چیز کا تحفظ کر رہے ہیں؟“ ان کا جواب واضح تھا ایک ایسی تہذیب جو اپنی تاریخ، اقدار اور کامیابیوں پر فخر کرتی ہے۔ انہوں نے یورپ کی فکری اور ثقافتی وراثت کا ذکر کرتے ہوئے ولف گینگ امدایوس موزارت، لڈوگ فان بیٹھون، ولیم شیکسپیر، لیونارڈو ڈا ونچی اور مائیکل اینجلو جیسے عظیم مفکرین اور فنکاروں کی مثالیں

دیا کہ امریکہ اس مقصد کو تنہا بھی حاصل کر سکتا ہے، لیکن وہ یورپ کے ساتھ مل کر آگے بڑھنے کو ترجیح دے گا۔ یہ بیان دراصل ٹرانس اٹلانٹک تعلقات کو نئی تعریف دینے کی سمت ایک اہم اشارہ ہے۔ روپیوں نے قومی سلامتی کو صرف فوجی یا تکنیکی مسئلہ نہیں بلکہ ایک تہذیبی مسئلہ قرار دیا۔ ان کے مطابق اصل سوال یہ ہے کہ ”ہم آخر کس چیز کا تحفظ کر رہے ہیں؟“ ان کا جواب واضح تھا ایک ایسی تہذیب جو اپنی تاریخ، اقدار اور کامیابیوں پر فخر کرتی ہے۔ انہوں نے یورپ کی فکری اور ثقافتی وراثت کا ذکر کرتے ہوئے ولف گینگ امدایوس موزارت، لڈوگ فان بیٹھون، ولیم شیکسپیر، لیونارڈو ڈا ونچی اور مائیکل اینجلو جیسے عظیم مفکرین اور فنکاروں کی مثالیں

# انبیاء میں سے بھی صرف سیدنا حضرت محمدؐ کا پیغام کیوں؟

میں موجود نہیں ہے کہ اس سے ہم ہدایت حاصل کر سکیں اور ان میں سے کسی کی زندگی کے حالات بھی ایسے محفوظ اور معتبر طریقے سے ہم تک نہیں پہنچے ہیں کہ ہم اپنی انفرادی اور اجتماعی زندگی کے مختلف شعبوں میں انہیں اپنا راہ نما بنا سکیں۔ اگر ان سارے انبیاء کی تعلیمات اور سیرت پر کوئی شخص سمجھ لکھنا چاہے تو چند صفحات سے زیادہ نہیں لکھ سکتا اور وہ بھی صرف قرآن کی مدد سے کیوں کہ قرآن کے سوا ان کے بارے میں کوئی مستند مواد موجود نہیں ہے۔

دنیا کی مشہور ترین مذہبی شخصیتوں میں سے ایک بودھا تھا۔ زردشت کی طرح اس کے متعلق بھی یہ گمان کیا جاسکتا ہے کہ شاید وہ نبی ہو۔ مگر اس سے سارے کوئی کتاب پیش ہی نہیں کی، نہ اس کے پیرووں نے کبھی یہ دعویٰ کیا کہ وہ کوئی کتاب لایا تھا۔ اس کی وفات کے سو سال بعد اس کے اقوال اور حالات کو جمع کرنے کا سلسلہ شروع کیا گیا اور صدیوں تک چلتا رہا۔ مگر اس طرح کی جتنی کتابیں بدھ مذہب کی اصل کتابیں سمجھی جاتی ہیں ان میں سے کسی کے اندر بھی کوئی سند درج نہیں ہے جس سے معلوم ہو کہ کس ذریعہ سے ان اقوال واقعات اور تعلیمات کے مرتب کرنے والوں کو بدھ کے حالات اور اس کے اقوال پہنچے تھے۔ اس سے معلوم ہوا کہ اگر ہم دوسرے انبیاء اور مذہبی پیشواؤں کی طرف رجوع کریں بھی تو ان کے بارے میں کوئی مستند ذریعہ ایسا نہیں ہے جس سے ہم ان کی تعلیمات اور ان کی زندگیوں سے اطمینان اور یقین کے ساتھ راہ نمائی حاصل کر سکیں۔

دیں جس کی زندگی کا ہر شعبہ اس علم کا عملی مظہر ہو۔ اس مختصر بیان سے یہ بات واضح ہو جاتی ہے کہ ہم راہ نمائی کے لیے صرف ایک نبی کی سیرت ہی کے محتاج ہیں۔ کوئی غیر نبی اگر نبی کا پیرو نہ ہو تو خواہ وہ کیسا ہی تبحر عالم اور دانا و فزازنہ ہو، ہمارا راہ نما نہیں ہو سکتا، کیوں کہ اس کے پاس حقیقت کا علم نہیں ہے، اور جسے حقیقت کا علم نہ ہو وہ ہمیں کوئی صحیح و برحق نظام حیات نہیں دے سکتا۔

میں بالکل غیر محسوس طریقے سے ایک تدریج کے ساتھ اپنی پیدا کی ہوئی دنیا سے آپ کا تعارف کراتا رہا ہے۔ واقفیت کے نئے نئے دروازے آپ پر کھولتا رہا ہے، اور وقتاً وقتاً ایک الہامی طریقے سے کسی نہ کسی انسان کو ایسی بات بھجاتا رہا ہے جس سے وہ کوئی نئی چیز ایجاد، یا کوئی نیا قانون دریافت کر سکا لیکن بہر حال ہے یہ انسانی علم ہی کا دائرہ جس کے

مکمل ہدایت مل سکتی ہے جس کے ہم فی الواقع محتاج ہیں۔ خدائی ہدایت کی ضرورت: یہ ایک ناقابل انکار حقیقت ہے کہ علم کا سرچشمہ اللہ تعالیٰ کی ذات ہے جس نے اس کائنات کو بنایا ہے اور اس میں انسان کو پیدا کیا ہے۔ اس کے سوا کائنات کی حقیقتوں کا اور خود انسانی فطرت اور اس کی حقیقت کا علم اور کس کو ہو سکتا ہے؟ خالق ہی تو اپنی مخلوق کو جان سکتا ہے۔ مخلوق اگر کچھ جانے گی تو خالق کے بتانے ہی سے جانے گی۔ اس کے پاس خود اپنا کوئی ذریعہ ایسا نہیں ہے جس سے وہ حقیقت کو جان سکے۔ اس معاملے میں دو قسم کی چیزوں کا فرق اچھی طرح سمجھ لینا چاہیے تاکہ خلطِ مجت نہ ہونے پائے۔

لیے کسی نبی اور کسی کتاب کی حاجت نہیں ہے اور اس دائرے میں جو معمولات مطلوب ہیں انہیں حاصل کرنے کے ذرائع انسان کو دے دیے گئے ہیں۔ دوسری قسم کی چیزیں وہ ہیں جو ہمارے حواس کی پہنچ سے بالاتر ہیں۔ جن کا ادراک ہم کسی طرح نہیں کر سکتے۔ جنہیں نہ متول سکتے ہیں، نہ ناپ سکتے ہیں، نہ اپنے علم کے ذرائع میں سے کوئی ذریعہ استعمال کر کے انہیں معلوم کر سکتے ہیں۔ فلسفی اور سائنس دان ان کے متعلق اگر کوئی رائے قائم کرتے ہیں تو وہ محض قیاس پر مبنی ہوتی ہے جسے عمل نہیں کہا جاسکتا۔ یہ آخری حقیقتیں (Ultimate Realities) ہیں جن کے بارے میں استدلالی نظریات کو خود وہ لوگ بھی یقینی قرار



گیسٹ کالم  
عبدالعزیز

اللہ تعالیٰ انسان کو یہ علم دیتا ہے وہ وحی ہے جو صرف انبیاء پر نازل ہوتی ہے۔ اللہ تعالیٰ نے آج تک بھی یہ نہیں کیا کہ ایک کتاب چھاپ کر ہر انسان کے ہاتھ میں دے دی ہو اور اس سے کہا ہو کہ اسے پڑھ کر خود معلوم کر لے کہ تیری اور کائنات کی حقیقت کیا ہے اور اس حقیقت کے لحاظ سے دنیا میں تیرا طرز عمل کیا ہونا چاہیے۔ اس علم کو انسانوں تک پہنچانے کے لیے اس نے ہمیشہ انبیاء ہی کو ذریعہ بنایا ہے تاکہ وہ صرف اس علم کی تعلیم ہی دے کر نہ رہ جائیں بلکہ اسے سمجھائیں بھی، اس کے مطابق عمل بھی کر کے دکھائیں، اس کے خلاف چلنے والوں کو راہ راست پر لانے کی کوشش بھی کریں اور اسے قبول کرنے والوں کو ایک ایسے معاشرے کی شکل میں منظم بھی کر

لیے کسی نبی اور کسی کتاب کی حاجت نہیں ہے اور اس دائرے میں جو معمولات مطلوب ہیں انہیں حاصل کرنے کے ذرائع انسان کو دے دیے گئے ہیں۔ دوسری قسم کی چیزیں وہ ہیں جو ہمارے حواس کی پہنچ سے بالاتر ہیں۔ جن کا ادراک ہم کسی طرح نہیں کر سکتے۔ جنہیں نہ متول سکتے ہیں، نہ ناپ سکتے ہیں، نہ اپنے علم کے ذرائع میں سے کوئی ذریعہ استعمال کر کے انہیں معلوم کر سکتے ہیں۔ فلسفی اور سائنس دان ان کے متعلق اگر کوئی رائے قائم کرتے ہیں تو وہ محض قیاس پر مبنی ہوتی ہے جسے عمل نہیں کہا جاسکتا۔ یہ آخری حقیقتیں (Ultimate Realities) ہیں جن کے بارے میں استدلالی نظریات کو خود وہ لوگ بھی یقینی قرار

لیے کسی نبی اور کسی کتاب کی حاجت نہیں ہے اور اس دائرے میں جو معمولات مطلوب ہیں انہیں حاصل کرنے کے ذرائع انسان کو دے دیے گئے ہیں۔ دوسری قسم کی چیزیں وہ ہیں جو ہمارے حواس کی پہنچ سے بالاتر ہیں۔ جن کا ادراک ہم کسی طرح نہیں کر سکتے۔ جنہیں نہ متول سکتے ہیں، نہ ناپ سکتے ہیں، نہ اپنے علم کے ذرائع میں سے کوئی ذریعہ استعمال کر کے انہیں معلوم کر سکتے ہیں۔ فلسفی اور سائنس دان ان کے متعلق اگر کوئی رائے قائم کرتے ہیں تو وہ محض قیاس پر مبنی ہوتی ہے جسے عمل نہیں کہا جاسکتا۔ یہ آخری حقیقتیں (Ultimate Realities) ہیں جن کے بارے میں استدلالی نظریات کو خود وہ لوگ بھی یقینی قرار

لیے کسی نبی اور کسی کتاب کی حاجت نہیں ہے اور اس دائرے میں جو معمولات مطلوب ہیں انہیں حاصل کرنے کے ذرائع انسان کو دے دیے گئے ہیں۔ دوسری قسم کی چیزیں وہ ہیں جو ہمارے حواس کی پہنچ سے بالاتر ہیں۔ جن کا ادراک ہم کسی طرح نہیں کر سکتے۔ جنہیں نہ متول سکتے ہیں، نہ ناپ سکتے ہیں، نہ اپنے علم کے ذرائع میں سے کوئی ذریعہ استعمال کر کے انہیں معلوم کر سکتے ہیں۔ فلسفی اور سائنس دان ان کے متعلق اگر کوئی رائے قائم کرتے ہیں تو وہ محض قیاس پر مبنی ہوتی ہے جسے عمل نہیں کہا جاسکتا۔ یہ آخری حقیقتیں (Ultimate Realities) ہیں جن کے بارے میں استدلالی نظریات کو خود وہ لوگ بھی یقینی قرار

## महावीर जयंती पर पीएम मोदी ने सम्राट सम्प्रति संग्रहालय का किया उद्घाटन

गांधीनगर। (टॉप ब्यूरो) प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भगवान महावीर जयंती के पावन अवसर पर गुजरात के गांधीनगर स्थित कोबा तीर्थ में सम्राट सम्प्रति संग्रहालय, जैन धरोहर संग्रहालय का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने देशवासियों को महावीर जयंती की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि यह स्थल आध्यात्मिक शांति और साधना का केंद्र है, जहाँ जैन मुनियों और संतों की तपस्या की परंपरा जीवंत रूप में दिखाई देती है।

प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि कोबा तीर्थ वर्षों से अध्ययन, साधना और आत्मानुशासन की परंपराओं का साक्षी रहा है। उन्होंने मूल्यों के संरक्षण, संस्कारों के संवर्धन और ज्ञान के पोषण को भारतीय सभ्यता की आधारशिला बताते हुए कहा कि इस त्रिवेणी को निरंतर बनाए रखना हम सभी की जिम्मेदारी है।

उन्होंने कहा कि सम्राट सम्प्रति संग्रहालय जैन धर्म के शाश्वत ज्ञान और भारत की समृद्ध सांस्कृतिक



धरोहर को आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। यह संग्रहालय जैन दर्शन, भारतीय संस्कृति और प्राचीन परंपराओं का जीवंत केंद्र बनकर उभरेगा। प्रधानमंत्री ने इस पहल के लिए जैन संतों, मुनियों और श्रद्धालुओं के योगदान की सराहना की। सम्राट

सम्प्रति के ऐतिहासिक महत्व का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्होंने सत्ता को सेवा और साधना का माध्यम बनाया तथा अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह जैसे मूल्यों का व्यापक प्रचार-प्रसार किया। उन्होंने कहा कि ऐसे शासकों ने भारतीय परंपरा में विचार और शासन के बीच

सेतु का कार्य किया।

प्रधानमंत्री ने संग्रहालय की संरचना की सराहना करते हुए कहा कि इसकी सात दीर्घाएँ भारत की सांस्कृतिक विविधता और समृद्धि को दर्शाती हैं। इनमें जैन दर्शन के मूल सिद्धांतों से लेकर तीर्थंकरों की शिक्षाओं तक को आधुनिक और आकर्षक रूप में

प्रस्तुत किया गया है।

उन्होंने यह भी कहा कि यह संग्रहालय केवल जैन धरोहर तक सीमित नहीं है, बल्कि वैदिक, बौद्ध और अन्य भारतीय परंपराओं को भी समाहित करता है, जो 'विविधता में एकता' की भारतीय भावना को मजबूत करता है। वैश्विक अस्थिरता के दौर में ऐसे केंद्र मानवता को शांति और सहअस्तित्व का संदेश देते हैं।

पांडुलिपियों के संरक्षण पर जोर देते हुए प्रधानमंत्री ने 'ज्ञान भारतम् मिशन' का उल्लेख किया, जिसके तहत प्राचीन ग्रंथों का डिजिटलीकरण और वैज्ञानिक संरक्षण किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह अभियान देशभर में बिखरी अमूल्य धरोहर को सहेजने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

अंत में प्रधानमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि सम्राट सम्प्रति संग्रहालय ज्ञान, संस्कृति और साधना का प्रमुख केंद्र बनकर उभरेगा तथा आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा।

## डाक कर्मचारियों के प्रतिनिधिमंडल ने डॉ. जितेंद्र सिंह से की मुलाकात, विभिन्न मुद्दों पर हुई चर्चा

नई दिल्ली। डाक कर्मचारियों और विभिन्न डाक संघों के प्रतिनिधियों के एक प्रतिनिधिमंडल ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह से मुलाकात की। उन्होंने समय-समय पर उनके मुद्दों को प्रभावी ढंग से निपटाने के लिए प्रधानमंत्री मोदी और कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) को धन्यवाद दिया।

प्रतिनिधिमंडल ने डाक विभाग से संबंधित कई मुद्दों पर चर्चा की, जिनमें कुछ क्षेत्रों में कैडर पुनर्गठन, वित्तीय उन्नयन योजनाओं का कार्यान्वयन और पेंशन संबंधी मामले शामिल हैं। मेल मोटर सेवा और संचार व्यवस्था में इसके भविष्य की भूमिका से संबंधित मुद्दों पर भी चर्चा हुई।

पेंशन और पारिवारिक पेंशन संबंधी मुद्दों को लेकर कई अभ्यावेदन दिए गए। इस संदर्भ में, डॉ. जितेंद्र सिंह ने लंबे समय से लंबित मामलों के त्वरित समाधान के लिए पेंशन अदालत, सीपीएनजीआरएएम और पेंशन शिकायत मंचों सहित मौजूदा संस्थागत तंत्रों का प्रभावी उपयोग करने का सुझाव दिया। प्रतिनिधिमंडल ने मौजूदा



योजनाओं के तहत करियर में प्रगति से संबंधित मुद्दों पर भी चर्चा की और सभी क्षेत्रों में कार्यान्वयन में अधिक एकरूपता की मांग की। सामाजिक सुरक्षा कवरेज और कल्याणकारी उपायों सहित ग्रामीण डाक सेवकों (जीडीएस) से संबंधित मामलों पर भी चर्चा हुई। डॉ. जितेंद्र सिंह ने देश भर में, विशेष रूप से ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में, अंतिम व्यक्ति तक सेवा वितरण

सुनिश्चित करने और चुनौतीपूर्ण समय के दौरान आवश्यक सेवाओं को बनाए रखने में डाक कर्मचारियों के योगदान को स्वीकार किया। केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने संचार और सेवा वितरण के बदलते स्वरूप का उल्लेख करते हुए उभरती प्रौद्योगिकियों और सार्वजनिक आवश्यकताओं के अनुरूप कार्यबल संरचनाओं और सेवा मॉडलों को दुरुस्त करने की आवश्यकता पर

बल दिया। उन्होंने प्रशासनिक और सेवा सुधारों के व्यापक ढांचे के भीतर नए रास्ते और अवसर तलाशने के लिए भी प्रोत्साहित किया।

इस वार्ता में परमाणु ऊर्जा और संबद्ध क्षेत्रों से जुड़े क्षेत्रों में समन्वय से संबंधित चर्चाएं भी शामिल थीं। इसका उद्देश्य संस्थागत क्षमताओं को मजबूत करना और हितधारकों की प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित करना था।

डॉ सिंह ने यह भी संकेत दिया कि कैडर पुनर्गठन से संबंधित मामलों की जांच संबंधित अधिकारियों के समन्वय से स्थापित प्रक्रियाओं के अनुसार की जाएगी।

उन्होंने बताया कि उठाए गए मुद्दों पर स्थापित नीतिगत प्रावधानों और लागू नियमों के अनुसार उचित विचार-विमर्श के लिए संबंधित मंत्रालयों और विभागों के साथ चर्चा की जाएगी।

# آئینی حدود سے تجاوز اور مذہبی آزادی پر حملہ

## جمیہ اپنے آئینی حقوق کی حفاظت کے لیے عدالت سے رجوع کرے گی: مولانا محمود اسعد مدنی

اس پر تین سال تک کی سزا مقرر کرنا، نیز ساٹھ دن کے اندر نکاح کی رجسٹریشن نہ کرنے پر ساٹھ ہزار روپے جرمانہ عائد کرنے سے متعلق دفعات مذکورہ آئینی اصولوں سے ہم آہنگ ہیں اور نہ ہی اخلاقی و قانونی معیارات پر پورا اترتی ہیں۔ یہ اقدامات غیر متناسب ہیں بلکہ شہری (سول) معاملات کو بلا جواز فوجداری دائرے میں لے آنے کی ایک سنگین مثال بھی ہیں۔ مولانا مدنی نے گجرات کے وزیر اعلیٰ کے اس بیان کو بھی مضحکہ خیز قرار دیا کہ "ایک ملک ہے تو ایک قانون ہونا چاہیے"، اور کہا کہ اگر ایسا ہے تو پھر شیڈولڈ کاسٹس کو اس قانون سے مستثنیٰ کیوں رکھا گیا؟ کیا وہ ملک کا حصہ نہیں ہیں؟ انہوں نے کہا کہ اس طرح کا عملی امتیاز آئین کے آرٹیکل 14 (حق مساوات) کی سنگین خلاف ورزی ہے۔ مولانا مدنی نے اعلان کیا کہ جمیہ علماء ہند اس قانون کو عدالت میں چیلنج کرے گی اور اس مقصد کے لیے تمام آئینی و قانونی ذرائع اختیار کیے جائیں گے تاکہ مسلمانوں کے مذہبی و آئینی حقوق کا مکمل تحفظ یقینی بنایا جاسکے اور شریعت اسلامی کے لازمی احکام کو کسی بھی صورت میں متاثر نہ ہونے دیا جائے۔



ذریعے ان احکام کو ختم یا غیر مؤثر بنانے کی کوشش نہ صرف قابل مذمت ہے بلکہ عدل کے بنیادی اصولوں کی صریح خلاف ورزی اور مسلمانوں کے ساتھ آئین سازوں کے کیے گئے عہد کی خلاف ورزی کے مترادف ہے۔ اسی طرح تعدد ازدواج پر رکلی پابندی عائد کر کے ایک مسلمہ شریعی اجازت کو غیر قانونی قرار دینا بھی مذہبی آزادی میں مداخلت ہے۔ مزید برآں، عدالت سے ماوراء اطلاق کی تمام صورتوں پر مکمل پابندی عائد کرنا اور

طور پر اسلامی احکام کی واضح ہدایات سے متصادم ہیں۔ ان میں سرفہرست اسلامی نظام وراثت ہے، جس کے حصے قرآن کریم میں نہایت صراحت کے ساتھ متعین اور ناقابل ترمیم قرار دیے گئے ہیں۔ ہر ایک وارث کا حصہ علیحدہ طور پر بیان کیا گیا ہے اور اسے حدود اللہ قرار دے کر تجاوز کرنے والوں کو ظالم کہا گیا ہے۔ اس اعتبار سے یہ محض مسلم پرسنل لا کا حصہ نہیں بلکہ صریح احکام الہی ہیں، جن پر عمل ہر مسلمان پر فرض ہے۔ لہذا اس قانون کے

نئی دہلی (ناپ ہور) جمیہ علماء ہند کے صدر مولانا محمود اسعد مدنی نے گجرات اسمبلی کی جانب سے منظور کردہ یکساں سول کوڈ پر شدید تشویش کا اظہار کرتے ہوئے اپنے بیان میں کہا ہے کہ یہ قانون مسلمانوں کے اُن عائلی و شخصی قوانین بالخصوص حق وراثت کی واضح شکلوں کو عملاً ختم کرنے کی کوشش ہے جو آئین ہند کے تحت تسلیم شدہ ہیں اور قرآن و سنت سے ماخوذ ہونے کی بنا پر محض سماجی ضابطے نہیں بلکہ لازمی دینی احکام کی حیثیت رکھتے ہیں۔ انہوں نے دو ٹوک انداز میں کہا کہ کسی بھی حکومت کو مذہبی عقائد اور شرعی احکام میں مداخلت کا کوئی آئینی اختیار حاصل نہیں۔ مزید برآں یکساں سول کوڈ کے نام پر مذہبی شخصی قوانین کا خاتمہ legislative overreach ہے جو ملک کی بڑی عدالت میں سخت آئینی جانچ پر پورا نہیں اترتا۔ جمیہ علماء ہند کے صدر محترم نے یہ بیان جمیہ کے وکلاء پینل کے ذریعے اس قانون کے مطالعے کے بعد دیا ہے۔ جمیہ کے وکلاء پینل کی جانب سے بل کے جامع مطالعے کے بعد یہ بات واضح طور پر سامنے آئی ہے کہ اس قانون میں خاص طور پر تین ایسے بنیادی پہلو شامل ہیں جو صریح

سی اے پی ایف بل 2026

پر راجیہ سبھا میں ہنگامہ سلیکٹ

کمیٹی کو بھیجے کا مطالبہ

نئی دہلی: مرکزی مسلح پولیس فورس (جزل ایڈمنسٹریشن) بل 2026 پر راجیہ سبھا میں بحث ہو رہی ہے۔ اپوزیشن اس بل کی مخالفت کر رہا ہے اور اسے واپس لینے یا پھر سلیکٹ کمیٹی کو بھیجے کا مطالبہ کر رہا ہے۔ اس تعلق سے آج راجیہ سبھا میں کافی ہنگامہ دیکھنے کو ملا۔ راجیہ سبھا میں اپوزیشن لیڈران دگ و جے سنگھ، سنے سنگھ اور رام گوپال یادو وغیرہ نے اس بل کے خلاف پرزور انداز میں اپنی بات رکھی۔ کانگریس رکن پارلیمنٹ دگ و جے سنگھ نے ایوان بالا میں مذکورہ بل پر اپنی بات رکھتے ہوئے کہا کہ یہ نیم فوجی دستہ مخالف بل ہے، یہ کریکشن نہیں ڈسٹرکشن ہے، عدالتی حکم کو پلٹنے کی کوشش ہے جس کی ہم مخالفت کرتے ہیں۔ اسے واپس لیں یا سلیکٹ کمیٹی کو بھیجیں۔ عاقل رکن پارلیمنٹ سنے سنگھ نے بھی اس بل کی مخالفت کرتے ہوئے کہا کہ "میں اس کے حق میں نہیں ہوں، اس لیے بل کو سلیکٹ کمیٹی کے پاس بھیجا جائے"۔ سماج وادی پارٹی رکن پارلیمنٹ رام گوپال یادو نے سی اے پی ایف بل 2026 معاملہ میں مرکزی وزیر داخلہ امت شاہ کو تنقید کا نشانہ بنایا۔

## قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان کی تنظیم نو کی امید مرکزی حکومت

### کاجواب موصول، جلد پیش رفت کا امکان: ڈاکٹر سید احمد خاں



نئی دہلی: قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان (این سی پی یو ایل) کے حوالے سے مرکزی حکومت کی جانب سے باضابطہ جواب موصول ہو گیا ہے، جس سے اس ادارے کی تنظیم نو اور انتظامی سرگرمیوں کی بحالی کی امیدیں روشن ہو گئی ہیں۔ اردو ڈیپارٹمنٹ آرگنائزیشن کے قومی صدر ڈاکٹر سید احمد خاں کو وزارت تعلیم کے تحت جو جواب موصول ہوا

ہے، اس میں بتایا گیا ہے کہ کونسل کی تشکیل نو کا عمل جاری ہے اور متعلقہ کمیٹیوں کی تشکیل بھی زیر غور ہے۔ خط کے مطابق ایگزیکٹو بورڈ اور گورننگ کونسل کی آئینہ نگاروں کے لیے کارروائی آخری مراحل میں ہے، جبکہ فنانس کمیٹی کی تشکیل بھی وزارت میں زیر غور ہے۔ اس سلسلے میں ڈاکٹر سید احمد خاں (قومی صدر، اردو ڈیپارٹمنٹ آرگنائزیشن) نے کہا کہ مرکزی حکومت کی جانب سے جواب ملنا ایک مثبت اشارہ ہے۔ انہوں نے امید ظاہر کی کہ این سی پی یو ایل کی تنظیم نو کا عمل جلد مکمل ہوگا اور ادارہ دوبارہ پوری فعالیت کے ساتھ اردو زبان کے فروغ میں اپنا کردار ادا کرے گا۔ انہوں نے مزید کہا کہ اردو زبان کے فروغ کے لیے یہ ادارہ نہایت اہمیت کا حامل ہے، اور اس کی فعالیت میں تاخیر سے اردو سے وابستہ تعلیمی و ثقافتی سرگرمیاں متاثر ہو رہی تھیں۔ حکومت کی جانب سے پیش رفت کی یقین دہانی سے اردو طبقے میں امید کی لہر پیدا ہوئی ہے۔ ذرائع کے مطابق، این سی پی یو ایل کی تنظیم نو کے بعد تعلیمی پروگراموں، اشتاعتی سرگرمیوں اور دیگر منصوبوں کو دوبارہ فعال کیا جائے گا، جس سے اردو زبان کے فروغ کو نئی رفتار ملے گی۔

## حزب اقتدار نے بجٹ کو عام لوگوں کا خیال رکھنے والا قرار دیا

نئی دہلی: راجیہ سبھا میں جمعہ کے روز مالیاں بل 2026، اور مالی تصرفات (نمبر 2) بل 2026 پر بیک وقت بحث کے دوران، حزب اختلاف نے حکومت پر بجٹ میں ضرورت مندوں کو نظر انداز کرنے کا الزام لگایا، جب کہ حزب اقتدار نے کہا کہ حکومت نے بجٹ میں عام لوگوں کا بھرپور خیال رکھا ہے۔ گجرات سے کانگریس کے شکتی سنگھ گوہل نے بجٹ کا آغاز کرتے ہوئے کہا کہ حکومت نے مالیات بل میں ضرورت مندوں، کسانوں اور خواتین کو نظر انداز کیا ہے۔ مالی سال 2023-24 کے اعداد و شمار کا حوالہ دیتے ہوئے، انہوں نے کہا کہ جہاں آٹھ لاکھ سے زائد لوگ 26 فیصد اضافہ ہوا تھا، وہیں مجموعی گھریلو پیداوار (جی ڈی پی) کے تناسب سے کارپوریٹ ٹیکس میں کمی آئی تھی۔ اس کا مطلب ہے کہ ٹیکس کا بوجھ عام لوگوں پر ڈالا جا رہا ہے اور صنعتوں کو بلیف دی جا رہی ہے۔ انہوں نے کہا کہ مالیات بل میں گجرات کے گاندھی نگر میں گفٹ ٹی 2047 تک ٹیکس میں چھوٹ فراہم کیا گیا ہے، جہاں امیر لوگ رہتے ہیں، لیکن عام لوگوں، کسانوں اور خواتین کو کوئی ریلیف فراہم نہیں کیا گیا ہے۔ سی اے بی کی رپورٹ کا حوالہ دیتے ہوئے مشرکتی سنگھ گوہل نے الزام لگایا کہ حکومت اپنے بیان کردہ مقصد کے علاوہ دیگر مقاصد کے لیے سیس اور سچارج کا استعمال کر رہی ہے۔ پی جے پی کے سنے سنگھ نے بحث میں حصہ لیتے ہوئے کہا کہ ہندوستان سب سے تیزی سے ترقی کرنے والی معیشت بن گیا ہے۔ آج دنیا بھر میں پیپروں اور ڈیزل کی قیمتوں میں اضافہ کیا گیا ہے جب کہ ہندوستان میں ایکسائز ڈیوٹی میں کمی کی قیمتوں کو برقرار رکھا گیا ہے۔ اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ حکومت کو عام آدمی کی فکر ہے۔ انہوں نے کہا کہ آٹھ لاکھ سے زائد لوگوں کو اضافہ ہو رہا ہے جس سے حکومت پر لوگوں کا اعتماد ظاہر ہوتا ہے۔ حکومت نے ٹیکس دہشت "ختم کر دی ہے اور کاروباری اداروں کو ٹیکس سے پاک کر دیا ہے۔ ترمیموں کو کانگریس کے سائیکس گوگل نے الزام لگایا کہ ایکسائز ڈیوٹی میں کمی چار یا ستوں میں انتخابات کی وجہ سے کی گئی ہے۔ اگر حکومت کو عام لوگوں کی فکر ہوتی تو وہ گزشتہ چار سالوں سے روس سے کم قیمت پر خام تیل خریدنے کے فائدے کو مانگتا دیتی، جو کہ عوام کو اب تک نہیں ملا۔ انہوں نے وزیر خزانہ

## ڈالر بمقابلہ روپیہ: وہ سال دوسرا تھا، یہ سال دوسرا ہے، کانگریس

### نے زملہ سیتارمن کے 2 متضاد بیانات رکھے سامنے



نئی دہلی: ڈالر کے مقابلہ روپیہ کی قدر لگا تراکتی جارہی ہے۔ 30 مارچ کو روپیہ کی قدر گھٹ کر 95 کے پار چلی گئی، حالانکہ بعد میں کچھ بہتری دیکھنے کو ملی۔ اس معاملہ میں کانگریس لگا تار مودی حکومت کو نشانہ بنا رہی ہے۔ کانگریس نے ایم مودی کے ذریعہ 2014 میں دیے گئے اس بیان کو کئی بار سامنے رکھ چکی ہے، جس میں پیسے کی قدر گھٹنے کو حکومت کی خراب کارکردگی سے جوڑا تھا۔ اب کانگریس نے روپیہ کی قدر گھٹنے سے متعلق مرکزی وزیر مالیات زملہ سیتارمن کے ایک پرانے بیان کی ویڈیو سوشل میڈیا پلیٹ فارم 'ایکس' پر شیئر کی ہے، اور ساتھ میں 30 مارچ کو لوک سبھا میں دیے گئے بیان کو بھی پیش کیا ہے۔ دونوں بیانات میں تضاد دکھائی دے رہا ہے۔ یعنی کانگریس نے زملہ سیتارمن کو آئینہ دکھانے کا کام کیا ہے۔ کانگریس نے 2 ویڈیوز کا مجموعہ 'ایکس' پر شیئر کیا ہے، اس میں پہلی ویڈیو 2013 کی ہے۔ ویڈیو میں وہ کہتی نظر آ رہی ہیں کہ "روپے کا گرنا انتہائی تشویش کی بات ہے۔ ایک ڈالر کے مقابلے پر 62 روپے پار کر چکا ہے، یہ فیکر انگیز حالات ہیں۔" دوسری ویڈیو 30 مارچ 2026 کی ہے، جب وہ روپیہ کی قدر گرنے پر لوک سبھا میں اپنا تاثر پیش کر رہی تھیں۔ ویڈیو میں وہ کہتی ہیں "ہمارا روپیہ ٹھیک چل رہا ہے۔" دراصل زملہ سیتارمن نے لوک سبھا میں کہا تھا کہ "دوسری بھرتی ہوئی معیشت کے مقابلے میں روپیہ ٹھیک چل رہا ہے، بالکل ٹھیک چل رہا ہے۔" کانگریس نے ان دونوں متضاد بیانات کو سامنے رکھتے ہوئے ویڈیو پر ٹیگ لگایا ہے وہ سال دوسرا تھا، یہ سال دوسرا ہے۔

# بی جے پی نے منریگا کو بند کر کے روزگار کے حق پر کلہاڑی چلا دی: ملاکار جن کھڑ گے

ڈھائی لاکھ کام ایسے ہیں جو شروع ہی نہیں ہو سکے۔ ان کے مطابق یہ صورت حال ظاہر کرتی ہے کہ اسکیم کو عملی طور پر کمزور کر دیا گیا ہے۔ انہوں نے مزید کہا کہ ایل پی جی کی قلت اور ضمنی سست روی کے باعث کئی مزدور شہروں سے دیہات واپس لوٹنے پر مجبور ہوئے ہیں، لیکن وہاں بھی انہیں روزگار نہیں مل رہا، جس سے ان کی معاشی حالت مزید خراب ہو رہی ہے۔ کانگریس کا الزام ہے کہ حکومت نے منریگا کے ذریعے مزدوروں کے حقوق کو متاثر کیا ہے اور یہ مسئلہ آنے والے وقت میں ایک بڑا سیاسی موضوع بن سکتا ہے۔

نے وی بی جی رام جی اسکیم کا حوالہ دیتے ہوئے کہا کہ 21 دسمبر 2025 کو اس کے نفاذ کے باوجود اس کا کوئی ٹھوس اثر نظر نہیں آ رہا۔ ان کے مطابق حکومت نے اس اسکیم کی بھرپور تشہیر کی، مگر مزدوروں کو اس سے کوئی حقیقی فائدہ نہیں پہنچا۔ انہوں نے سوال اٹھایا کہ جب پرانی اسکیم کو کمزور کیا جا رہا ہے تو نئی اسکیم کو موثر طریقے سے نافذ کیوں نہیں کیا جا رہا ہے کھڑ گے نے مہاراشٹر کی سی اے جی رپورٹ کا ذکر کرتے ہوئے کہا کہ گزشتہ پانچ برسوں میں منریگا کے تحت منظور شدہ کاموں میں سے 53 فیصد سے بھی کم مکمل ہو سکے ہیں، جبکہ تقریباً



مزدوروں کو سہارا دیا تھا۔ ان کا کہنا تھا کہ آج حالات یہ ہیں کہ کئی ریاستوں سے کام بند ہونے یا نہ ملنے کی شکایات مسلسل سامنے آ رہی ہیں، جو تشویشناک ہے۔ انہوں نے کہا کہ بہار کے مظفر پور میں گزشتہ 87 دنوں سے تقریباً 12 ہزار مزدور کام نہ ملنے کے خلاف احتجاج کر رہے ہیں۔ اس کے علاوہ اتر پردیش، ہریانہ، راجستھان اور مہاراشٹر سمیت کئی ریاستوں سے بھی منریگا کے کام رکنے کی اطلاعات موصول ہو رہی ہیں۔ بعض مقامات پر تو افسران کو سنے کام شروع نہ کرنے کی ہدایات دیے جانے کی بات بھی سامنے آئی ہے۔ کانگریس صدر

نئی دہلی: کانگریس صدر ملاکار جن کھڑ گے نے مرکزی حکومت پر الزام عائد کیا ہے کہ دیہی روزگار کی اہم اسکیم منریگا کو بتدریج کمزور کیا جا رہا ہے، جس کے باعث ملک کے مختلف حصوں میں مزدوروں کو کام نہیں مل رہا۔ انہوں نے کہا کہ حکومت جن نئی اسکیموں کا بڑے پیمانے پر تشہیر کر رہی ہے، وہ زمینیں سطح پر کھین دیکھتی نہیں دے رہی ہیں، جبکہ پرانی موثر اسکیموں کو نظر انداز کیا جا رہا ہے۔ کھڑ گے کے مطابق وزیر اعظم نریندر مودی اکثر کوڈ کے دور کا ذکر کرتے ہیں، مگر یہ بات بھول جاتے ہیں کہ اسی مشکل وقت میں منریگانے لاکھوں

## दिल्ली में शहरी विकास को बढ़ावा, आशीष सूद ने कई क्षेत्रों में विकास कार्यों का शुभारंभ

नई दिल्ली। दिल्ली शहरी विकास मंत्री आशीष सूद ने आज प्रेम नगर, बाल उद्यान रोड, मिलाप नगर, ईस्ट उत्तम नगर, रामदत्त एन्क्लेव और इंदिरा पार्क सहित विभिन्न क्षेत्रों में करोड़ों रुपये की लागत से सड़क, लेन तथा ड्रेनेज से जुड़े अनेक विकास कार्यों का शुभारंभ किया। एक सोशल मीडिया पोस्ट में, श्री सूद ने कहा कि इन कार्यों के माध्यम से क्षेत्र की बुनियादी सुविधाओं को सुदृढ़ कर नागरिकों को बेहतर और सुगम जीवन देने की



दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार का उद्देश्य केवल विकास की घोषणा करना नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि इन विकास कार्यों का प्रभाव हर गली और हर मोहल्ले

तक पहुंचे। श्री सूद ने यह भी कहा कि जनता के विश्वास और सहयोग के साथ, उनकी सरकार हर क्षेत्र में सुविधाओं के समान विकास और विस्तार को सुनिश्चित करने के लिए निरंतर ठोस कार्य करती रहेगी।

## कुछ राजनेता 'पिंक कार्ड' को लेकर भ्रम फैलाने की कोशिश कर रहे हैं: मुख्यमंत्री

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो के माध्यम से बताया कि कुछ राजनेता दिल्ली में महिलाओं को जारी किए गए 'पिंक कार्ड' को लेकर भ्रम फैलाने की कोशिश कर रहे हैं, और इसे राजनीतिक प्रचार का एक जरिया बना रहे हैं। उन्होंने इन राजनेताओं द्वारा फैलाए गए भ्रम को झूठा बताया और कहा कि कोई भी महिला अपने पिंक कार्ड का इस्तेमाल करके एक ही दिन में कई बार बस



से यात्रा कर सकती है। उन्होंने स्पष्ट किया कि कार्ड पूरी तरह से सही काम कर रहे हैं और इनका इस्तेमाल कई बार कर सकते हैं। उन्होंने दिल्ली की

महिलाओं को आश्चर्य किया है कि उन्हें चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है और वे आसानी से अपने पिंक कार्ड प्राप्त कर सकती हैं।

## बिहार के नालंदा में शीतलाष्टमी मंदिर में भगदड़, 8 महिलाओं की मौत; प्रधानमंत्री मोदी ने की अनुग्रह राशि की घोषणा

बिहार में आज सुबह नालंदा जिले के बिहार शरीफ स्थित मघडा शीतलाष्टमी मंदिर में धार्मिक अनुष्ठानों के दौरान अचानक भगदड़ मच गई, जिससे बड़ा हादसा हो गया। इस दुर्घटना में अब तक आठ महिला श्रद्धालुओं की मौत की पुष्टि हुई है, जबकि कई अन्य लोग घायल बताए जा रहे हैं। घायलों को तुरंत नजदीकी अस्पतालों में भर्ती कराया गया, जहां उनका उपचार जारी है। कुछ घायलों की हालत गंभीर बताई जा रही है, जिससे मृतकों की संख्या बढ़ने की आशंका जताई जा रही है।



प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, मंदिर परिसर में भारी भीड़ जुटी हुई थी और पूजा-अर्चना के दौरान किसी अफवाह के फैलने से अचानक अफरा-तफरी मच गई। देखते ही देखते हालात बेकाबू हो गए और लोग एक-दूसरे को धक्का देते हुए बाहर निकलने की कोशिश

करने लगे। इसी दौरान भगदड़ की स्थिति उत्पन्न हो गई, जिसमें कई लोग गिर पड़े और उन्हें गंभीर चोटें आईं।

घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय प्रशासन और पुलिस मौके पर पहुंची और राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया

गया। प्रशासन ने स्थिति को नियंत्रण में लाने के साथ ही घायलों को अस्पताल पहुंचाने का कार्य तेजी से किया।

अधिकारियों ने मामले की जांच के आदेश दिए हैं और यह पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है कि अफवाह किस वजह से फैली।

इस बीच, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस हादसे पर गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने सोशल मीडिया पर अपनी संवेदनाएं व्यक्त करते हुए मृतकों के परिजनों के प्रति सहानुभूति जताई और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। प्रधानमंत्री ने प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से प्रत्येक मृतक के परिजनों को दो-दो लाख रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की है, जबकि घायलों को पचास-पचास हजार रुपये की सहायता दी जाएगी।

स्थानीय प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि वे अफवाहों पर ध्यान न दें और शांति बनाए रखें, ताकि इस तरह की घटनाओं से बचा जा सके।

### लोक सेवा आयोग ने प्रांतीय सिविल सेवा परीक्षा 2024 के परिणाम किए घोषित



उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग ने प्रांतीय सिविल सेवा परीक्षा 2024 के परिणाम घोषित कर दिए हैं। इस परीक्षा में चयनित 932 अभ्यर्थियों में से आठ सौ 64 उत्तर प्रदेश से हैं, जबकि 68 अभ्यर्थी अन्य राज्यों से हैं। परिणामों में महिलाओं की मजबूत उपस्थिति दिखी है। शीर्ष पांच

चयनित अभ्यर्थियों में चार महिलाएं हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने चयनित अभ्यर्थियों को बधाई दी है। साथ ही, परीक्षा को पूर्ण पारदर्शिता, निष्पक्षता और निष्ठा के साथ आयोजित करने के लिए उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की भी प्रशंसा की है।

### बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राज्यसभा सदस्य चुने जाने के बाद विधान परिषद से इस्तीफा दिया

बिहार के मुख्यमंत्री और जनता दल यूनाइटेड-जेडीयू के अध्यक्ष नीतीश कुमार ने राज्यसभा के लिए हाल ही में चुने जाने के बाद संवैधानिक प्रावधानों का पालन करते हुए राज्य विधान परिषद की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है।

जेडीयू विधायक संजय गांधी ने नीतीश कुमार का इस्तीफा विधान परिषद के अध्यक्ष अवधेश नारायण सिंह को सौंपा। पटना में संवाददाताओं से बातचीत



में वरिष्ठ मंत्री विजय कुमार चौधरी ने यह जानकारी साझा की। मुख्यमंत्री के इस्तीफे के संबंध में जल्द ही आधिकारिक घोषणा होने की उम्मीद है। जेडीयू प्रमुख इस महीने की 16 तारीख को राज्य सभा के लिए निर्विरोध चुने गए थे।

### जम्मू संभाग में 100 स्कूलों में हर्बल उद्यान बनाने के प्रस्ताव को मंजूरी

केंद्रीय आयुष मंत्रालय के राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड ने जम्मू संभाग में 100 स्कूलों में हर्बल उद्यान बनाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। इस पर भ्रम लाख रुपये की लागत आएगी।

जम्मू-कश्मीर में आयुष निदेशालय के अनुसार, इस पहल का उद्देश्य पारंपरिक ज्ञान को स्कूली शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करके औषधीय पौधों के बारे में जागरूकता और संरक्षण को बढ़ावा देना है। जम्मू में विद्यालय शिक्षा निदेशालय ने विभिन्न जिलों से इस परियोजना के लिए



दस विद्यालयों का चयन किया है। ये औषधि उद्यान व्यावहारिक शिक्षण स्थल के रूप में कार्य करेंगे, जहां छात्र औषधीय पौधों की पहचान, खेती और उपयोग के बारे में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करेंगे, साथ ही इससे उनमें प्रकृति और पारंपरिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों के प्रति सम्मान की भावना विकसित होगी।

# جمعیت علماء ہند کے صدر دفتر مسجد عبدالنبی میں تکمیل قرآن کی روح پرور مجلس منعقد

آئی جب کہ دس روزہ تراویح میں قرآن کریم مکمل کرنے والے حافظ ابوبکر اور سامح مولانا محمد کلیم الدین قاسمی کا بھی استقبال ہوا۔ نعت رسول مقبول صلی اللہ علیہ وسلم کی سعادت حافظ محمود اور مفسر قرآن مولانا اخلاق حسین قاسمی کے فرزند جناب اشفاق نجی نے حاصل کی۔ مجلس کا اختتام حاجی محمد آزادی رقت انگیز دعا پر ہوا۔ آخر میں جمعیت علماء صوبہ دہلی کے صدر مولانا محمد قاسم نوری اور دینی تعلیمی بورڈ کے جنرل سکرٹری قاری عبدالسیح نے مہمانوں کا تہہ دل سے شکریہ ادا کیا۔ مجلس میں شریک اہم شخصیات میں مفتی ذکات حسین قاسمی، مولانا افتخار ہاویز، مولانا سالم جاسمی، مولانا قاری عارف قاسمی، مفتی تحلیل احمد قاسمی، مولانا آفتاب عالم صدیقی، حاجی ربیس سیمپوری، حاجی نوشاد ابن بابا قاری سیف اللہ، مولانا عبدالقادر مظفر نگر، آصف قریشی بڈھانہ، مولانا جاوید صدیقی قاسمی، مولانا حافظ یوسف اعظمی، مولانا سلمان قاسمی، حاجی زبیر پھل والے، اسد میاں، مولانا ضیاء اللہ قاسمی اور وسم صدیقی (ایڈیٹر ہفت روزہ الامان)، مولانا ابوس رشیدی، مولانا ابو الہاشم آسام، مولانا شمس القمر، مولانا اظہر ظفر مہوں، عبدالعلیم بھائی مسجد البتین برہم پوری، واصف صدیقی، مولانا سیف علی ہاویز، حافظ سیم بدرکھ، ایڈووکیٹ طیب خاں، سمیت دیگر معزز شخصیات شامل تھیں، جب کہ جمعیت علماء ہند کے مرکزی دفتر کے کئی اہم ذمہ داران بھی اس بابرکت محفل کا حصہ بنے۔



کیا۔ اپنے خطاب کے دوران انہوں نے اس حقیقت کی طرف بھی توجہ دلائی کہ ہر شخص کا حافظ قرآن ہونا ضروری نہیں، بلکہ قرآن سے کسی بھی درجے کی وابستگی چاہے وہ تلاوت کی صورت میں ہو، سماعت کی شکل میں یا محض دیکھنے کی حد تک، بھی بارگاہ الہی میں باعث اجر و قبول ہے۔ انہوں نے حضرت شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی کے تاریخی واقعہ کا حوالہ دیتے ہوئے قرآن کریم کی حقانیت کو واضح کیا اور جماعت تبلیغ و جمعیت علماء ہند کے باہمی رشتے کی مضبوطی پر بھی روشنی ڈالی۔ مرکز جماعت تبلیغ، نظام الدین کے معزز مہمان مولانا نظر الاسلام (اڈیشہ) نے علماء کی ذمہ داریوں پر گفتگو کرتے ہوئے اس بات پر زور دیا کہ اہل علم کو مساجد کو اپنا مرکز بنانا چاہیے اور عوام کو قرآن و سنت کی روشنی میں زندگی گزارنے کی ترغیب دینی چاہیے۔ انہوں نے کہا کہ قرآن کریم ہی دنیا و آخرت کی کامیابی کی کلید ہے اور اس کے بغیر کسی قوم کی حقیقی ترقی ممکن نہیں۔ دیگر مقررین میں ایم ایل اے عمران حسین (سابق وزیر حکومت دہلی)، مولانا محمد قاری جعفر (مہتمم مدرسہ یاسینیہ سراج العلوم کھوڈا مظفر نگر)، حافظ محمد قاسم (ناظم جمعیت علماء باغپت)، جمعیت علماء ہند کے سینئر آرگنائزر مولانا غیور قاسمی اور مولانا یاسین جہازی شامل تھے، جنہوں نے اپنے خطابات سے مجلس کو مزید معنویت بخشی۔ اس موقع پر مولوی زید ندوی بن قاری عبدالسیح کی ندوۃ العلماء سے تکمیل عالمیت پر ان کی اعزازی دستار بندی کی گئی، جبکہ تکمیل قرآن پر حافظ محمود اور مولانا رافت کی بھی دستار بندی عمل میں

نئی دہلی (ٹائمز پور) جمعیت علماء ہند کے صدر دفتر، مسجد عبدالنبی میں تکمیل قرآن کے موقع پر ایک بابرکت، روح پرور اور نورانی مجلس کا انعقاد ہوا، جس کی صدارت مرکز نظام الدین سے تشریف لائے حاجی محمد آزاد نے فرمائی۔ اس محفل میں دہلی کے جید علماء، قراء و حفاظ، معزز شخصیات اور جمعیت علماء ہند کے ذمہ داران کی کثیر تعداد شریک ہوئی۔ مرکز جماعت تبلیغ، بنگلہ والی مسجد کے اہم ذمہ داران کی شرکت نے مجلس کو مزید وقار بخشا، جن کا استقبال ناظم عمومی جمعیت علماء ہند مولانا حکیم الدین قاسمی نے گرم جوشی سے کیا۔ اس بابرکت موقع پر حافظ محمود بن مولانا حکیم الدین قاسمی نے گزشتہ سال کی طرح امسال بھی نماز تراویح میں قرآن کریم مکمل کرنے کی سعادت حاصل کی، جبکہ سامع کے فرائض مولانا رافت نے حسن اہتمام کے ساتھ انجام دیے۔ ناظم عمومی جمعیت علماء ہند مولانا حکیم الدین قاسمی نے اپنے خطاب میں قرآن کریم کی عظمت، اس کی لافانی برکات اور انسانی زندگی میں اس کے عملی نفاذ کی ضرورت کو نہایت مؤثر انداز میں اجاگر کیا۔ انہوں نے زور دے کر کہا کہ قرآن مجید محض تلاوت کی کتاب نہیں بلکہ حیات انسانی کے ہر گوشے کے لیے ایک مکمل دستور حیات ہے، اور اس کی تعلیمات پر عمل ہی حقیقی کامیابی کی ضمانت ہے۔ انہوں نے صدر جمعیت علماء ہند حضرت مولانا محمود اسعد مدنی کی قیادت میں جمعیت کی بے مثال جدوجہد اور قربانیوں کا بھی مؤثر تذکرہ

## جج 2026: انتظامات کے لیے دہلی اسٹیٹ جج کمیٹی کی میٹنگ اور رام لیلا میدان کا مشترکہ معائنہ



والے انتظامات پر تفصیلی غور و خوض ہوا۔ اس سلسلے میں محکمہ محصولات حکومت دہلی (ہیڈ کوارٹر) کے ڈپٹی کمشنر اور ضلع وسطی کے ڈی ایم جی سدھا کر کی نگرانی میں دہلی کے معروف رام لیلا میدان میں جج انتظامات سے متعلق کیے جانے والے کاموں کی تیاری کے لیے تمام متعلقہ محکموں، مثلاً دہلی میونسپل کارپوریشن، دہلی اربن شیلڈر اپروومنٹ بورڈ، دہلی پولیس، دہلی جیل بورڈ، محکمہ صحت، بجلی محکمہ وغیرہ کے افسران کے ساتھ رام لیلا میدان کا

نئی دہلی: گزشتہ دنوں حکومت دہلی کے گزٹ (غیر معمولی) مورخہ 9 مارچ کے ذریعہ دہلی اسٹیٹ جج کمیٹی کی مدت کار میں آئندہ 6 ماہ کی توسیع کے بعد 12 مارچ کو توسیع شدہ جج کمیٹی کی پہلی میٹنگ منعقد کی گئی۔ اس میٹنگ میں چیئر پرسن کوثر جہاں، رکن نازیر دانش (نغم پارشد)، رکن محمد سعید، جج کمیٹی کے ایگزیکٹو آفیسر اشفاق احمد عارفی اور ڈپٹی ایگزیکٹو آفیسر محسن علی نے شرکت کی۔ میٹنگ میں جج 2026 کے لیے کیے جانے

مشترکہ معائنہ کیا گیا۔ تمام متعلقہ محکموں کے افسران کو ہدایت دی گئی کہ تمام ضروری کام جلد از جلد آئندہ 10 ماہ پر عمل کے پہلے ہفتے تک مکمل کر لیے جائیں۔ واضح رہے کہ جج 2026 کا سفر 18 اپریل سے شروع ہوگا اور 20 مئی تک جاری رہے گا۔ اس دوران دہلی اسٹیٹ جج کمیٹی کے انتظامات کے تحت دہلی سمیت ملک کی مختلف ریاستوں کے تقریباً 22 ہزار جج کرام دہلی سے اپنے مقدس جج کے سفر کے لیے روانہ ہوں گے۔

## بہار: نالندہ کے شیتلا مندر میں بھگدڑ، 8 عقیدت مندوں کی موت، انتظامیہ پر اٹھے سوال



بہار: بہار کے نالندہ ضلع سے ایک افسوسناک خبر سامنے آئی ہے جہاں آج (منگل) صبح ایک مندر میں بھگدڑ مچنے سے 8 خواتین عقیدت مندوں کی موت ہو گئی۔ بھگدڑ میں کئی دیگر لوگ زخمی بھی ہوئے ہیں جن میں متعدد کی حالت نازک بتائی جا رہی ہے۔ جس کی وجہ سے خیال کیا جا رہا ہے کہ مرنے والوں کی تعداد میں اضافہ ہو سکتا ہے۔ یہ واقعہ دیپ نگر تھانہ علاقہ کے تحت گھڑا گاؤں واقع مشہور شیتلا دیوی مندر میں پیش آیا۔ واردات کے بعد مندر احاطے میں کھرام بچ گیا۔ بتایا جا رہا ہے کہ زیادہ بھگدڑ اور ناکافی انتظامات کی وجہ سے افسوسناک واردات پیش آئی۔ حادثے کی تکثیری کو دیکھتے ہوئے انتظامیہ نے فوری طور سے میلہ اور مندر کو بند کروا دیا۔ راحت اور بچاؤ کام شروع کر دیا گیا ہے۔ حالانکہ انتظامیہ کے لیے اسپتال بھیجا گیا ہے۔ حالانکہ انتظامیہ نے ابھی تک ہلاک ہونے والے عقیدت مندوں کی صحیح تعداد کی تصدیق نہیں کی ہے۔ فوراً طلب ہے کہ یہاں ہر منگول ہزاروں کی تعداد میں عقیدت مند پوجا کرنے آتے ہیں۔ اے بی پی نیوز کے مطابق اس منگول کو

سیکورٹی کے انتظامات مکمل طور پر خراب نظر آئے۔ پوجا میں شرکت کرنے کے لیے عقیدت مندوں کی بڑی بھیڑ جمع ہوئی تھی جس میں کسی وجہ سے بھگدڑ مچ گئی۔ واردات کی اصل وجہ تا حال معلوم نہیں ہو سکی ہے۔ اطلاع ملتے ہی کئی ایسبونسٹس جانے وقوع پر پہنچیں۔ ایس ڈی ایم بھی موقع پر پہنچ گئے۔ اس واردات میں زخمی ہونے والے عقیدت مندوں کی تعداد تقریباً 10 سے 12 بتائی جا رہی ہے۔ زخمیوں کو علاج کے لیے صدر اسپتال بھیجا گیا ہے۔ مندر کے احاطے کو مکمل طور پر خالی کرا لیا گیا ہے۔ واقعہ کے بعد پولیس کی بھاری نفری موقع پر موجود ہے۔ کہا

## مہاویر جینتی پر کھڑے، رائل اور پرییکا گاندھی کا خراج تحسین، عدم تشدد و سچائی پر زور



مہاویر کی سچائی، عدم تشدد، قربانی اور ہمدردی کی تعلیمات پوری دنیا کے لیے مشعل راہ ہیں اور انسانیت کی بھلائی کا راستہ دکھاتی ہیں۔ انہوں نے کہا کہ ان تعلیمات کو اپنی زندگی میں اپنانا وقت کی اہم ضرورت ہے۔ کانگریس جنرل سکرٹری پرییکا گاندھی نے اپنے پیغام میں کہا کہ بھگوان مہاویر نے سچائی، عدم تشدد، امن، محبت اور ہمدردی کا درس دے کر انسانیت کو راستہ دکھایا۔ انہوں نے کہا کہ یہی اقدار ہماری قدیم تہذیب کی بنیاد ہیں اور جدید دنیا کے چیلنجز کا سامنا کرنے کے لیے ان اصولوں کو اپنانا ضروری ہے۔ ادھر، وزیر اعظم زیندر مودی نے بھی

نئی دہلی: جین مذہب کے 24 ویں تیرتھکر بھگوان مہاویر کی جینتی کے موقع پر کانگریس قیادت، ماکارجن کھڑے، رائل گاندھی اور پرییکا گاندھی نے عدم تشدد، سچائی اور ہمدردی کے پیغام کو اجاگر کرتے ہوئے انہیں آج کے دور کے لیے نہایت اہم قرار دیا۔ رہنماؤں نے اس موقع پر عوام کو مبارکباد پیش کی اور بھگوان مہاویر کی تعلیمات کو انسانی فلاح کا راستہ بتایا۔ کانگریس صدر ماکارجن کھڑے نے اپنے پیغام میں کہا کہ مہاویر جینتی کے اس مقدس موقع پر تمام شہریوں کو مبارکباد پیش کرتا ہوں۔ انہوں نے کہا کہ بھگوان مہاویر کے اصول، انہا (عدم تشدد)، اینتیا (کشتیت) اور اپریگرہ (عدم ملکیت) آج کے چیلنجز سے نمٹنے میں گہری رہنمائی فراہم کرتے ہیں۔ ان کے مطابق یہ تہوار ہمیں سچائی، ہمدردی، ہم آہنگی اور بھائی چارے کے تئیں اپنی وابستگی کو مضبوط کرنے کی ترغیب دیتا ہے۔ لوگ سچائی میں قائم رہیں اور اختلاف رائل گاندھی نے بھی عوام کو مہاویر جینتی کی مبارکباد دیتے ہوئے کہا کہ بھگوان